लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

चौदहवां संस्करण

मितान

2020



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़-रायपुर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़-रायपुर



नई दुनिया 29.8.19

हॉकी में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए मृणाल का महालेखाकार ने किया सम्मान

हाल में आयोजित टूर्नामेंट में किया था सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

रायपुर। नईदुनिया खेल प्रतिनिधि

अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी मृणाल चौबे की खेलों में उपलब्धियों को लेकर महालेखाकार (लेखापरीक्षक) दिनेश राघभानजी पाटिल (आइएएएस) ने उन्हें सम्मानित किया। हाल में संपन्न हॉकी प्रतियोगिता में कैग की टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए मृणाल ने टीम को गोल्ड मेडल दिलाया। बेस्ट गोलकीपर और मैन ऑफ द मैच जैसे सम्मान हासिल किए हैं। उनके इस प्रदर्शन को देखते हुए महालेखाकार ने सम्मानित किया है।



मृणाल ने हॉकी इंडिया राष्ट्रीय प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीतने के साथ भारत के नियंत्रक एवं महालेखाकार टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतिष्ठित केडी सिंह बाबू अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता लखनऊ में ब्रांज मेडल के साथ बेस्ट गोलकीपर का खिताब अपने नाम किया था। मृणाल ने देश के शीर्ष सुरजीत हॉकी प्रतियोगिता जालंधर में मैन ऑफ द मैच भी अपने नाम किया है। प्रदेश स्तर में भी मृणाल ने बेस्ट गोलकीपर का खिताब अपने नाम किया है।

गौरव की बात

महालेखाकार ने कहा कि मृणाल प्रदेश व हमारे कार्यालय के गौरव है। उनकी इस उपलब्धि पर वरिष्ठ उप महालेखाकार इति शुक्ला एवं उप महालेखाकार प्रियांती वाडोले ने भी शुभकामना दी व उज्ज्वल भविष्य की कामना की। मृणाल राज्य अलंकरण गुरु ध्रुर सम्मान, खेल अलंकरण शहीद राजीव पांडेय, शहीद कौशल यादव सम्मान से सम्मानित एवं प्रदेश के उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित हैं।



वेस्ट जोन आई ए एवं ए डी क्रिकेट टूर्नामेन्ट, मुम्बई एजी ऑफिस में आयोजित से वापसी पर महालेखाकार (ऑडिट) के साथ कर्टसी मीटिंग



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चौदहवां संस्करण

मितान

2020

हिन्दी वार्षिक पत्रिका

स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

छत्तीसगढ़-रायपुर

जीरो पाईंट, बलौदा बाजार रोड,
पिन - 492005







वेस्ट जोन आई ए एवं ए डी क्रिकेट टूर्नामेन्ट, मुम्बई एजी ऑफिस में आयोजित
एवं विजेता चीफ मिनिस्टर ट्रॉफी छत्तीसगढ़





वेस्ट जोन आई ए एवं ए डी टेबल टेनिस टूर्नामेन्ट चैम्पियनशीप 2017-18, नागपुर में आयोजित



वेस्ट जोन आई ए एवं ए डी टेबल टेनिस चैम्पियनशीप
टूर्नामेन्ट 2017-18, नागपुर एवं
एजी ऑफिस टीम
(छत्तीसगढ़ सीनियर इंटर डिस्ट्रीक्ट क्रिकेट टी-20 चैम्पियनशीप)



छत्तीसगढ़ स्टेट टेबल टेनिस चैम्पियनशीप 2019-20,
दुर्ग में आयोजित - मेन्स सिंगल चेम्पियन



मितान परिवार

संरक्षक

श्री दिनेश रायभानजी पाटील

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

अध्यक्ष

श्री राजीव कुमार

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) छत्तीसगढ़, रायपुर

परामर्शदात्री समिति

सुश्री इति शुक्ला
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ए.एम.जी. I)

मोह. फैज़ान नैय्यर
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन, लेखा एवं वी.एल.सी.)
(लेखा एवं हकदारी)

सुश्री प्रियाती कौड़ो
उप महालेखाकार (ए.एम.जी. II)

श्री एम. एस. डहरिया
उप महालेखाकार (निधि एवं पेंशन)
(लेखा एवं हकदारी)

संपादक मंडल

सुश्री दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री संतोष श्यामराव सरोजकर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री एन. के. बिसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी बाजपेयी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री संगीता साटकर
पर्यवेक्षक

श्री योगेश पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री उत्तम कुमार सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री वाय. जवाहर
वरिष्ठ लेखापाल

15 अगस्त 2020 की झलकियाँ













दिनेश आर. पाटील
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

अपार हर्ष का विषय है कि, प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी, राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका **''मितान''** का 14वाँ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा में भारत के वे विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान हैं, जिसकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय हैं। अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से, अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी को सरलतम रुप में अपनाकर शासकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। हमें अपने अंतः मन में ऐसा निश्चय करना होगा और अपना कर्तव्य मानना होगा कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए किसी संकल्प की आवश्यकता न पड़े।

''मितान'' पत्रिका कार्यालय के कर्मचारियों/अधिकारियों की कल्पना तथा उनके विचारों की अभिव्यक्ति और उनकी रचनाशीलता को प्रोत्साहित करने का रचनात्मक माध्यम है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने इस रचनात्मक उददे्श्य में सफल होगी।

मै **''मितान''** पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं इस पत्रिका में योगदान देने वाले समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

दिनेश आर. पाटील
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़

हिन्दी राजभाषा दिवस


कार्यालय महालेखाकार
छत्तीसगढ़, रायपुर
भाषा हिन्दी सप्ताह समारोह - 2019
दिनांक


कार्यालय महालेखाव
छत्तीसगढ, रायपुर
से 20.09.2


कार्यालय म
छत्तीसगढ
हिन्दी सप्त


राजभाषा


2019



राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका **'मितान'** के 14 वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं अत्यंत प्रफुल्लित हूँ। मितान पत्रिका के माध्यम से एक ऐसे सार्थक वातावरण की संरचना होती है, जहां कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को अपनी रचना के माध्यम से सामने आने का अवसर प्राप्त होता है । कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि के लिए यह एक अत्यंत ही सराहनीय उपलब्धि है ।

'मितान' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को बधाई देता हूं, जिनकी रचनाओं से इस पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बन पाया है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका **'मितान'** का यह अंक अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में भी सहायक होगा ।

शुभकामनाओं सहित...

राजीव

राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

हिन्दी राजभाषा दिवस




कार्यालय महालेखाकार
छत्तीसगढ़, रायपुर
राजभाषा हिन्दी सप्ताह समारोह - 2019








कार्यालय महालेखाकार
छत्तीसगढ़, रायपुर


कार्यालय महालेखाकार
छत्तीसगढ़, रायपुर


कार्यालय महालेखाकार
छत्तीसगढ़, रायपुर



सम्पादकीय

''भाषा'' मानव समाज का अविभाज्य अंग है । मनुष्यों मे भाषा के विकास के कारण वह अन्य जीवो से विशेष दर्जा हासिल कर पाया है । भाषा के विकास के कारण मानव सुसंस्कृत एवं सुसभ्य हो सका, अनेकानेक रीति–रिवाजों, आचरणों और नैतिक मूल्यों का समुचित विकास कर पाया है ।

भारतीय संस्कृति अनगिनत भाषाओं से समृद्ध रहा है । उनमे से हिन्दी भाषा, भारत देश के व्यापक क्षेत्र में करोड़ो भारतीयों के द्वारा बोला, लिखा व पढ़ा जाता है । हिन्दी भाषा साहित्य की धनी है । अपने सहिष्णु स्वभाव के कारण हिन्दी अन्य भाषाओं एवं बोलियों के शब्दावलियों को समेटे हुये दिखाई देती है। इसकी झलक पत्रिका के अनेक लेखो में परिलक्षित होती हैं ।

कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका **"मितान"** का चौदहवाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । कार्यालय के कार्मिकों द्वारा अपनी रचनात्मक सामग्रियों, प्रेरणादायी कविता, रोचक लेखों को इस पत्रिका में शामिल करने हेतु अंतिम दिवस तक विशेष रुचि दिखाई गई जो हमे पत्रिका को अधिकाधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने हेतु मनोबल देता है।

पत्रिका के संपादन हेतु योगदान देने वाले सभी रचनाकारो का हम संरक्षक, परामर्शदाता एवं संपादक मंडल की ओर से धन्यवाद ज्ञपित करते है । पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रिया से हमे अवश्य अवगत कराएँ ताकि पत्रिका को और सुंदर एवं बेहतर बनाया जा सके ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाओं सहित।

सम्पादक
दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

26 जनवरी 2020 की झलकियाँ















अनुक्रमणिका

लेख / रचना

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृ.क्र.
1	भाषा के बनते बिगड़ते प्रतिमान	कु. मीनाक्षी बाजपेयी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	1–2
2	छत्तीसगढ़ की प्रमुख गुफाऐं	श्री राजेश कुमार वर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षक	3
3	छत्तीसगढ़ की प्रमुख मंदिर	श्री राजेश कुमार वर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षक	3–4
4	नई शुरूआत	श्री अभिषेक सक्सेना सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	5
5	जीवन एक संघर्ष	श्री शुभंकर राय चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	5
6.	धैर्य	श्री अभिषेक सक्सेना सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	6
7	छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार ''कमरछठ''	सुश्री दिव्या साहू वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	7
8	घर आया दफ्तर, स्कूल ...	अपूर्वा श्री, वरिष्ठ लेखापाल	8
9	जो न भीगा बरसात में	श्री योगेश पाण्डेय सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	9
10	मैं गुजर जाऊँगा	श्री योगेश पाण्डेय सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	9
11	देश की प्रतिभा ...देश के अंदर	अपूर्वा श्री, वरिष्ठ लेखापाल	10
12	कोरोना संघर्ष	श्री विशाल शुक्ला वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	11
13	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक	श्री विजय केशवानी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	12
14	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता	श्री प्रेम प्रकाश यादव, डी.ई.ओ.	13–14
15	कान की व्यथा	मो. जफर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	15
16	नर्स को समर्पित	श्री विकास कुमार, एम.टी.एस.	16
17	लॉकडाउन के फायदे व लॉकडाउन के नुकसान	ए. श्रीराम मूर्ति, वरिष्ठ लेखापाल	17–18
18	राधा तो एक बहाना था	श्री शुभंकर राय चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	19
19	इस दुनिया में जब से फैला, चाईना से कोरोना	श्री प्रेम प्रकाश यादव, डी.ई.ओ.	20
20	अवसाद	मो. जफर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	21
21	स्वयं का मूल्य जानिए	मो. जफर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	22
22	माँ भारती को समर्पित	श्री विकास कुमार, एम.टी.एस.	23

लेख / रचना

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृ.क्र.
23	ये सोचने का विषय है	सुश्री लेखा उदयन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	24
24	गाँधी : कल, आज और हमेशा	श्री प्रतीक सिंह, लेखापरीक्षक	25
25	तुम्हारे खत मिले, किताबों की सफाई में	श्री लाल साहेब सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	26
26	तुम्हें क्या मिला मिटाकर	श्री लाल साहेब सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	26
27	आस	श्री लाल साहेब सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	27
28	बेटी – हमको भी इंसान बनाओ	श्री लाल साहेब सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28
29	वो बचपन की यादें	श्री राजेश कुमार सिंह वरिष्ठ लेखापाल	29–30
30	राजनीति का सर्कस	सुश्री प्रमिला बाघ, लेखापरीक्षक	31
31	गलतफहमी	श्री अरूण कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31
32	अखबार	श्री लाल साहेब सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	32
33	एक नजर भारत–चीन विवाद पर	श्री प्रेम प्रकाश यादव, डी.ई.ओ.	33–34
34	तेरा भी सम्मान होगा	श्री राजेश कुमार सिंह वरिष्ठ लेखापाल	35
35	विचारों का तूफान	कु. निशा ध्रुव, एम.टी.एस.	36
36	जिंदगी	कु. निशा ध्रुव, एम.टी.एस.	36
37	कारीगर हूँ कलम का	कु. निशा ध्रुव, एम.टी.एस.	36
38	आज ईंटे और दीवारें भी करने लगी है बातें	श्री शुभंकर राय चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	37
39	किस्सा एडम्स एप्पल का	श्री शुभंकर राय चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	38
40	किसान	श्री अरूण कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	38
41	पदोन्नति / सेवानिवृति		39–44

भाषा के बनते बिगड़ते प्रतिमान



नई सामाजिक जगहें जहाँ किसी भी मेले–ठेले या जमावड़े से कहीं ज़्यादा लोगों का जमघट हर समय लगा रहता है जिन्हें हम आमतौर पर सोशल मीडिया के नाम से जानते हैं.. ऐसी जगहें जहाँ आपकी मित्रमंडली हज़ारों की हो सकती है चाहे अपने निजी जीवन में आपके दोस्त कितनी भी सीमित संख्या में हों। इन जगहों ने शिष्टाचार और सभ्यता के एकदम नए मानदण्डों को जन्म दिया है। इन नए सामाजिक चौक–चौराहों ने न केवल हमारे आचार–व्यवहार और जीने के तरीकों में बदलाव ला दिया है बल्कि चीज़ों को देखने के हमारे नज़रिये और उसे अभिव्यक्त करने के तौर–तरीकों को भी आमूल–चूल ढंग से बदल डाला है। हमारी आम भाषा में अब fine को f9, great को gr8 और you को u लिखा जाने लगा है। आप अगर यह सोच रहे हैं कि यह समस्या तो अंगरेज़ी की है हमारी हिन्दी में भला क्या बदलाव आ सकता है तो आप ग़लत सोच रहे हैं क्योंकि इन प्लेटफॉर्म्स की पहुंच न तो सिर्फ अंगरेज़ीदां लोगों तक है और न ही कोई ऐसी भाषा इनसे अछूती रह सकती है जो एक बहुत बड़े भूभाग पर करोड़ों लोगों द्वारा प्रयोग की जाती हो। बल्कि हिन्दी और अन्य भाषाओं के साथ तो संकट और भी गहरा है क्योंकि ये भाषाएं तो अब अपनी लिपि भी खोती जा रही हैं। हिन्दी टंकण की अनेक तकनीकों और यन्त्रों के विकास के बावजूद हममें से ज़्यादातर लोग अपने हिन्दी के संदेशों को देवनागरी की जगह रोमन लिपि में ही लिखना पसंद करते हैं।

देखते ही देखते यह नई भाषा खासी लोकप्रिय हो गई क्योंकि इसमें संदेश भेजने वालों को अपनी अंगुलियाँ कम दुखानी पड़ रही थीं और छोटे संदेश (SMS) भेजते समय सीमित स्थान में ही कम शब्दों में ज़्यादा बात कहकर पैसे भी बचाए जा सकते थे और पढ़ने वाले को समझ में तो आ ही जाता था। दिक्कत तब आई जब नई पीढ़ी के बच्चों किशोरों और युवाओं ने न केवल भाषा के इस नए रूप को तेज़ी से सीखा और ग्रहण किया बल्कि वे इसका प्रयोग अपनी परीक्षा–पुस्तिकाओं और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में भी करने लग गए। ऐसे में लाज़मी ही था कि भाषा के इस नए स्वरूप को लेकर बहस होने लगी। कुछ लोग जो शुद्धतावादी थे वे सदियों में विकसित भाषिक परंपरा को खोना नहीं चाहते थे। उन्हें यह नई भाषा ओछी और बाज़ारू जान पड़ती थी। उन्होंने बहुत मेहनत से भाषा को उसके शुद्ध रूप में सीखा और समझा था। वहीं इस भाषा के हिमायती लोगों का तर्क था कि भाषा का काम संप्रेषणीयता है और चूंकि यह भाषा इस कार्य को पूरी कुशलता के साथ कर रही है इसलिए इसके प्रयोग में कोई दोष नहीं है। बल्कि यह कम समय, स्थान और प्रयास में ज़्यादा बात कहती है इसलिए इसकी संप्रेषण क्षमता कहीं ज़्यादा है और इसे बढ़ावा मिलना चाहिए। पर इसकी भी अपनी समस्याएं हैं। मान लीजिए आपके किसी मित्र का जन्मदिन हो और आप उसे बधाई देते हुए लिखें HBD। इससे आपका समय और श्रम तो ज़रूर बच जाएगा पर बहुत संभव है कि आपका मित्र इस बधाई संदेश का जवाब न दे और बुरा मान जाए। ऐसे संदेश का क्या अर्थ जब आप अपने दोस्त के लिए 5 सेकंड का समय निकालकर उसे तीन पूरे शब्द भी न लिख सकें। यह बात सिर्फ आपके दोस्त को ही नहीं और भी बहुत से लोगों को खली होगी इसीलिए तकनीक के विकास के साथ और लोगों की ज़रूरत के हिसाब से और भी कई नए विकल्प पैदा हो गए। आज आपको न तीन शब्द टाइप करने हैं और न 5 सेकंड का समय देना है। आपकी सुविधा के लिए ढेर सारे रंग–बिरंगे चित्रों से सजे हर अवसर के माकूल बने–बनाए संदेश हैं, छोटी–छोटी वीडियो क्लिप (GIF) हैं और ढेरों की तादाद में इमोजी हैं जो आपके मनोभावों को व्यक्त करने में पूरी तरह से आपका साथ देते हैं। इनमें न तो टाइप करने का झमेला है और न अंगुलियों की कसरत। एक सेकंड के छठवें हिस्से में आप इनके माध्यम से अपनी बात कहकर आगे बढ़ जाते है। पढ़ने वाले के लिए भी ये रोचक और आकर्षक हैं इसलिए आपके HBD से नाराज़ हो जाने वाला आपका मित्र अब आपके ऐसे सलीके वाले संदेश पाकर ख़ुशी से बधाई भी स्वीकारता है और आपको जवाब भी देता है।

हम इस नई भाषिक परंपरा की पड़ताल करें तो पाएंगे कि हज़ारों सालों में जो भाषा शुरूआती चित्रलिपियों से होती हुई विशाल शब्द–भण्डारों और क्लिष्ट व्याकरण वाले अपने आधुनिक स्वरूप में आई है वह वापस उसी रास्ते से चलकर पुनः अपने प्रारंभिक स्वरूप में जा रही है और यह सब हज़ारों सालों में नहीं सिर्फ कुछ दशकों में हमारी आँखों के सामने होता दिख रहा है। सभ्यता के उदय के साथ मनुष्य को जब अभिव्यक्ति की और उसे किसी न किसी रूप में संजोने की ज़रूरत महसूस हुई तब उसने सबसे पहले चित्रलिपियों को ही अपनाया। यह किसी भी लिपि का सरलतम रूप था। मछली लिखना है तो मछली बना दीजिए पेड़ लिखना है तो पेड़, घोड़ा लिखना है तो घोड़ा। इससे आसान क्या हो सकता है भला। दुनिया भर में फैली भीमबेटका जैसी सैकड़ों गुफाओं में हज़ारों साल पहले मनुष्य ने इसी भाषा में खुद को अभिव्यक्त किया। इसकी सबसे अच्छी बात यह भी है कि यह पूरी दुनिया में एक जैसी है और इसे समझने के लिए किसी औपचारिक शिक्षा या अक्षरज्ञान की ज़रूरत भी नहीं है। मछली को अंगरेजी में 'fish' और हिन्दी में 'मछली' लिखेंगे पर चित्रलिपि में हर जगह मछली का चित्र। फिर जैसे–जैसे मनुष्य की विचार क्षमता विकसित होती गई यह चित्र–भाषा अपर्याप्त मालूम होने लगी और नए–नए शब्द–अर्थ गढ़े जाने लगे और उनके साथ ही लिपि में भी बदलाव आता चला गया। चित्रों की जगह आड़ी–टेढ़ी रेखाओं और संकेत–चिह्नों ने ले ली और धीरे–धीरे भाषा अपने उस रूप में पहुंची जिस रूप में आज हम उसे जानते हैं।

आपको अगर लगता है कि यह तो उन कुछ लोगों का शिगूफा है जो सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं बाकी दुनिया इससे अछूती है और रहेगी तो जनाब आप इस बात से कतई वाकिफ़ नहीं हैं कि जुलाई 2020 के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार दुनिया भर में करीब 2.9 अरब लोग अकेले फेसबुक पर सक्रिय हैं जो किसी भी देश की जनसंख्या से कहीं ज़्यादा है। और इनमें सबसे ज़्यादा लगभग 27 करोड़ लोग भारतीय हैं। हर एक सेकेंड में इनमें 400 नए लोग जुड़ जाते हैं यानी जितने समय में आप यह लेख पढ़ेंगे उतने समय में फेसबुक पर ही करीब 1.44 लाख नए लोग जुड़ चुके होंगे। ये लोग हर रोज़ औसतन 57 मिनट फेसबुक पर बिताते हैं और हर एक मिनट में तकरीबन 3.17 लाख स्टेटस, 1.47 लाख फोटो और 1.5 लाख मैसेज साझा करते हैं। इन सभी संदेशों में मुख्य भाग फोटो, इमोजी और वीडियो आदि का होता है। टेक्स्ट या तो ग़ायब है या फिर गौण है और उसका आकार दिनों–दिन सिकुड़ता जा रहा है।

एक–दो दशक के बाद बहुत संभव है कि ऐसा समय भी आए जब आधुनिक भाषाएं अपने वर्तमान स्वरूप में सिर्फ पुस्तकालयों, कार्यालयों और विद्यालयों में प्रयोग की जाएं। ऐसा भी संभव है कि किसी समय ये चित्रलिपियाँ भी नेपथ्य में चली जाएं और भाषा फिर से अपने आदिम रूप ध्वनियों और आवाज़ों में रह जाए। जिस तेजी से छात्रों के बीच आजकल ऑनलाइन पढ़ाई और वीडियो कक्षाओं का चलन बढ़ रहा है जो उन्हें अपनी जगह से हिले बग़ैर सुदूर बैठे कुशलतम शिक्षकों से पढ़ सकने की सहूलियत देता है उसे देखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति तो नहीं लगता। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी और आपसी संपर्क के ख़तरों ने इस प्रक्रिया में और भी तेजी ला दी है। किताबों के बोझ और काग़ज़ों के ढेर की जगह अब पेनड्राइव का डाटा ले रहा है जो एक इंच की जगह और पांच ग्राम के वज़न में छोटे–मोटे पुस्तकालय को समेटने की सामर्थ्य रखता है। डिजिटल किताबें और ऑनलाइन पढ़ाई सिर्फ जगह और सहूलियत के लिहाज से ही नहीं पर्यावरण को बचाने की नज़र से भी काफ़ी कारगर हैं। जो भी हो भाषा का विकास एक सतत स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसे कुछ सीमा तक प्रभावित तो किया जा सकता है पर रोका नहीं जा सकता और न यह काम्य ही है। मानव समाज अपनी ज़रूरतों के हिसाब से इसके नए–नए रूप गढ़ता ढहाता रहेगा। आज के समय में उसके पास भाषा की स्वच्छन्द चित्रलिपि से लेकर व्याकरण के कठोर नियमों से अनुशासित आधुनिक भाषा तक अनेकानेक विरासतें हैं जिन्हें वह एक साथ अपनी पसंद सुविधा और ज़रूरत के हिसाब से प्रयोग कर सकता है। मनुष्य नाम का प्राणी जब तक समाज में अपना अस्तित्व तलाशता रहेगा तब तक उसे संप्रेषण की ज़रूरत बनी रहेगी और तब तक भाषाएं और लिपियाँ भी अपने नए ठौर–ठिकाने तलाशती रहेंगी।

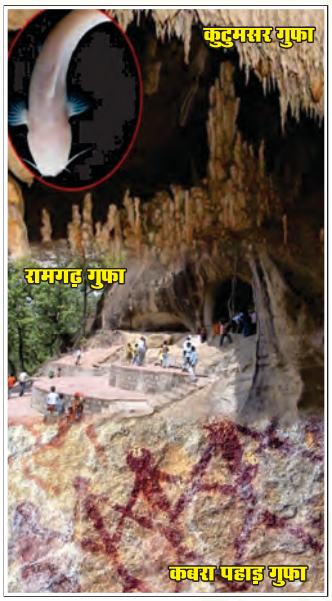


सुश्री मीनाक्षी बाजपेयी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



छत्तीसगढ़ की प्रमुख गुफाएँ

- **कुटुमसर गुफा** :– यह एक भूमिगत गुफा है, जो जगदलपुर के पास ही स्थित है। यह गुफा स्टेलेक्टाइट तथा स्टेलेग्माइट से बना हुआ है। इस गुफा की छत से लटकते चूने के स्तम्भ देखने में अधिक रोचक लगते हैं, यह गुफा अंधी मछलियों का निवास स्थान है। इस गुफा के द्वार इतने छोटे और गोलाकार हैं कि एक बार में केवल एक ही व्यक्ति अंदर जा सकता है। इस गुफा की लंबाई 4500 फीट है चूने और पानी से बनी इस सुंदर गुफा में कहीं–कहीं शिवलिंग का आभास भी होता है।
- **कैलाश गुफा** :– यह बस्तर की कांगेर घाटी में स्थित एक प्राकृतिक गुफा है। बस्तर के अतिरिक्त इसी नाम की एक गुफा जशपुर जिले में बगीचा से 10 किमी की दूरी पर है। यह आज रामेश्वर गुरू गहिरा बाबा के आश्रम के रूप में जानी जाती है।
- **दंडक गुफा** :– यह बस्तर की कांगेर घाटी में स्थित एक प्राकृतिक गुफा है।
- **कबरा पहाड़ गुफा** :– यह रायगढ़ से मात्र 8 किमी पूर्व में स्थित है, यहां से प्राचीनतम मानव निवास के प्रमाण मिले हैं।
- **रामगढ़ गुफा** :– सरगुजा जिले में स्थित यह गुफा विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला का एक अंग है। विश्व की प्राचीनतम रंगशाला रामगढ़ की गुफा में है। जो ''सीता बेंगरा'' के नाम से प्रसिद्ध है।
- **शीत गुफा** :– यह बस्तर की कांगेर घाटी में स्थित एक प्राकृतिक गुफा है।
- **गुप्तेश्वर गुफा** :–यह जगदलपुर से 25 मील दक्षिण में स्थित है। इस गुफा में चूने के पत्थर के कटने से शिव की आकृति बन गई है जिसकी श्रद्धालु पूजा करते है।



छत्तीसगढ़ के प्रमुख मंदिर

- **भोरमदेव मंदिर** :– इस मंदिर में खजुराहो एवं कोणार्क मंदिर की कला का संगम है। यह मंदिर शिलाओं को तराशकर नागर शैली में निर्मित किया गया है। इस मंदिर का नामकरण गोंड देवता भोरमदेव के नाम पर हुआ है। यह मंदिर 5 फीट अधिष्ठान पर निर्मित है। भोरमदेव मंदिर "छत्तीसगढ़ के खजुराहो" के नाम से प्रसिद्ध है यहाँ महाशिवरात्रि एवं चैत्र सुदी तेरस के अवसर पर वर्ष में दो बार मेला लगता है। इस मेले में देश–विदेश से हजारों की संख्या मे पर्यटक पहुँचते है। यहां प्रतिवर्ष भोरमदेव महोत्सव का भव्य आयोजन होता है।
- **लक्ष्मण मंदिर** :– यह मंदिर महासमुंद जिले के सिरपुर नामक स्थान में स्थित है, मंदिर के गर्भगृह में शेषनाग युक्त लक्ष्मण जी की एक प्रस्तर की प्रतिमा है। इसी कारण इस मंदिर को लक्ष्मण मंदिर कहा जाता है। सम्पूर्ण मंदिर लाल ईंटों से बना हुआ है। धरातल से 50 फीट ऊँचे इस मंदिर में ईंटों से ही विभिन्न देवी–देवताओं, यक्ष, किन्नरों, पशुओ, पुष्पों के सुन्दर चित्र बनाए गए हैं।
- **राजीव लोचन मंदिर** :– यह मंदिर गरियाबंद जिले के राजिम में स्थित है, यह भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से एक है। यह मंदिर आयताकार है, मंदिर के गर्भगृह में काले पत्थर की बनी भगवान विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति विराजमान है जिसके हाथ में शंख, चक्र, गदा एवं पदम है। यह मूर्ति भगवान श्री राजीव लोचन के नाम से पूजनीय है। यह मंदिर भारत का पांचवाँ धाम माना जाता है। इस मंदिर के चारों कोनों में वामन, वाराह, नरसिंह और बद्रीनाथ के मंदिर तथा मुख्य मंदिर के अनुषंगी देवालय हैं।



- **माँ दंतेश्वरी मंदिर** :– यह मंदिर दंतेवाड़ा में स्थित है, इस मंदिर का निर्माण रानी भाग्येश्वरी देवी ने कराया है। मंदिर के सामने का भाग लकड़ी एवं लकड़ी की जालीनुमा दीवारों से निर्मित है, मंदिर के गर्भगृह में माँ दंतेश्वरी देवी की प्रतिमा विराजमान है। मंदिर के द्वार पर मानवाकार गरूड़ स्तम्भ है। मुख्य मंदिर से लगा एक नवग्रह मंदिर है जहां नवग्रहों की प्रतिमा विद्यमान है। शारदीय नवरात्रि के अवसर पर यहां एक विशाल मेला लगता हैं जो नौ दिनों तक चलता है। इस मंदिर के कुछ नियम हैं। मंदिर मे पैंट पहनकर एवं चमड़े का बेल्ट या चमड़े का बना कोई सामान लेकर जाना मना है।

- **महामाया मंदिर** :– यह मंदिर बिलासपुर जिले में स्थित एक अति प्राचीन मंदिर है। इसका निर्माण 11वीं सदी में राजा रत्नदेव ने कराया था । इस मंदिर के गर्भगृह में भगवती महामाया की प्रतिमा स्थापित है। नवरात्रि के अवसर पर यहां मेला लगता है एवं हजारों की संख्या में ज्योति कलश प्रज्जवलित किये जाते हैं। नवरात्रि के समय यहां आने वाले दर्शनार्थियों को महामाया ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क भोजन कराया जाता है।

- **बम्लेश्वरी देवी का मंदिर** :– यह मंदिर डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर स्थित है। इस मंदिर के निर्माण का श्रेय राजा वीरसेन को जाता है। मंदिर पहाड़ी के शिखर पर गोलाकार रूप में सफेद संगमरमर से निर्मित है, जिसका दरवाजा चाँदी का बना हुआ है। छत्तीसगढ़ी भाषा में माँ बम्लेश्वरी को भक्तजन "बमलाई दाई" के नाम से पुकारते हैं।

राजेश कुमार वर्मा
वरिष्ठ लेखा परीक्षक
सामाजिक क्षेत्र

नई शुरुआत

चलो नई शुरुआत करते हैं
अपने मन की बात करते हैं।

अपकर्ष अपमान का दौर खत्म करें
संवाद से विवाद की यात्रा विराम करें
पुनः नये संघर्ष की शुरुआत करते हैं
अपने मन की बात करते हैं।

झूठे वादे अब खत्म करें
फरेबी इरादे अब खत्म करें
सच्चाई के सूरज का सुप्रभात करते हैं
अपने मन की बात करते हैं।
चलो नई शुरुआत करते हैं।

शुरुआत जहां नित सूर्योदय हो
कोंपल से पतझड़ तक का जीवन प्रखर हो
सत्य संघर्ष से पुरुषार्थ करते हैं
चलो नई शुरुआत करते हैं
अपने मन की बात करते हैं।।

अभिषेक सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



जीवन एक संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है,
उससे लड़ते चलो।
हार ना मानो कभी किसी मोड़ पर,
अगर थक गए हो तो
किसी वृक्ष के छांव में थोड़ा सुस्ता लो।
पर जब तक सांस में सांस है,
जीने की आस लिए चलो।
जीवन एक संघर्ष है,
उससे लड़ते चलो।

पथिक हो तुम अनंत राह के।
इस राह में नदी, पहाड़, तूफान
सबसे मिलते जाना है।
कभी यह तुम्हें बाधित करेंगे,
तो कभी सहज सी राह भी बतलाएंगे।
इन्हें तुम अपना शत्रु ना समझ कर चलो।
यह तो जिंदगी का एक अटूट हिस्सा है।
इनसे भी मेल मिलाप करते चलो।
जीवन एक संघर्ष है
उस से लड़ते चलो।

कौन तुम्हारा अपना है
और कौन पराया है,
इसमें कोई भेद ना करते चलो।
न्याय ही परम सत्य है,
नाथ के दिए ज्ञान को याद करते चलो।
जीवन दर्शन को
संघर्ष का हिस्सा बनाते चलो।
जीवन एक संघर्ष है,
उससे लड़ते चलो।

- शुभंकर राय चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

धैर्य

प्रथम :

रक्तिम भानु
मरूतम भूमि
स्याह आकाश
संतृप्त घन
असंतृप्त – मेरा मन
सांझ की विदाई सा
जहां से लौट रहा हर प्रकाश अणु
हर टूटती आस सा
लो हो गया अंधकार
चहुं ओर
आज तो शशि भी नहीं
जो दे प्रकाश
ले चले मुझे अंधियारे के उस पार
ये काले मेघ भर–भर जल
भिगो रहे आज वसुंधरा का आँचल
वही वसुंधरा, जो तपती रही हर उष्ण ताप से
पूरे ज्येष्ठ ज्यों दुख और विषाद से
पीड़ाएं जब सीमा लांघ चुकी
वेदनाएं जब गगन को फांद चुकी;
कर संचय हर उस उष्ण ताप का
हर दुःख विषाद संताप का
गगन में वारिद डोल उठे
धरती को करने हिंडोल चले
लो रो रहा आज ये अम्बर
धरती पर गिरे नभ के अश्रुकण
सत्य है वेदनाओं दुखों का घट जब भर जाता है
अंधियारा रात्रि के अंतिम प्रहर तक जब छा जाता है
तब ही सूर्योदय होता है
नूतन रश्मियों से जग संजोता है
वे ही करते सुख का पान
संकटकाल में रखते जो धैर्य महान।

द्वितीय :

हा! वसुंधरा नाच उठी!!!
क्या? वसुंधरा नाच उठी???
इन्द्र के मधुर लय तानों से
ठंडे जल के मधुर बाणों से?
या पवन के शीत झोंकों से
मुक्त हो उष्ण ताप के प्रकोपों से?
क्या कोयल का गीत मधुर ना हुआ
नव कोंपलों ने किसका हृदय ना छुआ?
झरनों की कल–कल वाणी कैसी है
नहरें, झीलें, प्रवाहिनी कैसी हैं?
प्रकृति के इतने सुंदर नर्तन से
प्राणी मात्र के मंगल वंदन से
किसका हृदय द्रवित ना हुआ
क्यों धरा को इन भावों ने ना छुआ?
क्या वृक्ष कभी द्रवित होते हैं
भावावेश में अपनी छांह खोते हैं?
नदियों को रुकते किसने देखा है
करुण क्रंदन में सब खोते देखा है?
हिमालय सी अचल इच्छाशक्ति से
साधु ये जीवन भजता है
सुख की शीतलता दुख के ताप से
ना रोता ना हंसता है।
ये मृत्युलोक असमान घड़ा
परमेश्वर ने ना सब एक समान गढ़ा
रात्रि के बाद दिवस तय है
प्रेम–विछोह, सुख–दुख, धूप–छांह तय है
किन्तु धैर्य के सतत कठिन तप से
संत सदा मुस्कुराते हैं
धरा सा अविचलित धैर्य धरते हैं
अनश्वरता का पुरस्कार पाते हैं।

अभिषेक सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार ''कमरछठ''



छत्तीसगढ़ में अनेक तीज त्यौहार मनाए जाते हैं। इनमे से दीपावली, होली, रक्षाबंधन, दुर्गापूजा, गणपति पूजा इत्यादि ऐसे त्यौहार हैं जो राष्ट्रीय स्तर पर भी मनाए जाते हैं जबकि हरियाली, हरतालिका तीज (तीजा), कमरछठ (हलषष्ठी), पितरपाख (पितृपक्ष) ऐसे त्यौहार हैं जो स्थानीय स्तर पर छत्तीसगढ़ में मनाए जाते हैं। इनमे से कमरछठ (हलषष्ठी) का व्रत त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसे भाद्र मास के कृष्ण पक्ष के षष्ठी के दिन मनाया जाता है। यह व्रत मुख्यतः अपने बाल गोपाल की लम्बी आयु , सुख समृद्धि के लिए माताओं द्वारा रखा जाता है । व्रत के दिन माताएँ नियमपूर्वक सुबह स्नान करके हलषष्ठी माता का ध्यान करते हुए व्रत रखती हैं। इस दिन सुबह छः प्रकार की भाजियां (हरे पत्तेदार सब्जियां) एवं पसहर चावल को साफ करके पारण के लिए रख लेती हैं। दोपहर में, दो गढ्ढे जो आपस में मध्य भाग से छेद हो, की खुदाई मंदिर या पवित्र स्थल के पास में की जाती है जिसे सगरी कहते हैं। कमरछठ के व्रत में इसी का विशेष महत्त्व होता है। दोपहर में उपासक माताएं अपने बाल गोपाल के साथ इसी सगरी की पूजा करने जाती हैं। सर्वप्रथम कांसी, परसा (पलाश) के डालियों



से सगरी को सजाया जाता है। उसके बाद छः दोने में लाई, महुआ, भुना चना, भुना मसूर, भुना उरद , भुना मूंग, भुना गेहूं इत्यादि भरकर सगरी को अर्पित करते हैं। बच्चों का खिलौना रूपी मिट्टी से बने भौरा(लट्टू), बाटी(कंचे), नाव, बैलगाड़ी, खाना बनाने के बर्तन इत्यादि भी अर्पित करते है । हलषष्ठी माताजी को स्त्री श्रृंगार की वस्तुएं भेंट की जाती हैं। सगरी के दोनों गड्ढों में कुल ६ बार दूध , दही, घी, पानी बारी–बारी से डाले जाते हैं। सगरी में वासित माता हलषष्ठी को दीप, धूप, अगरबत्ती, पुष्प इत्यादि अर्पित किये जाते हैं। माताजी की पूजा करने के पश्चात् समस्त स्त्रियाँ हलषष्ठी व्रत की छः कथाएँ बड़े ही श्रद्धाभाव से हाथ में चावल और फूल लेकर सुनती हैं। प्रत्येक कथा के पूर्ण होने पर हलषष्ठी माताजी का जयकारा भी लगाती हैं। तत्पश्चात माताजी की आरती गाई जाती है। सगरी के चारो ओर माताएं छः बार परिक्रमा करती है। कपड़े के छोटे टुकड़े या रुई को सगरी के पानी में डुबाकर अपने बच्चों की पीठ पर छः बार पोता मारती है जो कि माताजी का आशीर्वाद माना जाता है। अंततः पुजारी जी को कपड़े, चावल, दाल ,नमक, मिर्च तथा सगरी खोदने वाले भाई को कुछ धनराशि या चावल, दाल, मिर्च, नमक इत्यादि भेंट कर उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। सगरी एवं मंदिर प्रांगण से लौटने पर पारण की वस्तुएँ तैयार कर छः पत्तियों में छः प्रकार के जानवरों जैसे कुत्ता, बिल्ली, चीटीं, चिड़ियाँ, गाय आदि एवं बच्चों को प्रसाद खिलाया जाता है। माताएँ सूर्यास्त से पूर्व पारण कर लेती हैं और व्रत पूर्ण करती है। बच्चे इस दिन बड़े उत्साह से नए कपड़े पहनकर अपने सखा साथियों के साथ प्रांगण में खेलते हैं और खुशी मनाते हैं । महिलाएँ वर्ष भर इस त्यौहार को मनाने हेतु इंतजार करती हैं और हलषष्ठी माता से अपने बच्चों के लिए मंगल कामनाएँ करती हैं। यह व्रत ऐसा व्रत है जो मुख्यतः बच्चों के लिए रखा जाता है इसलिए देश के अन्य भूभाग से छत्तीसगढ़ में बसी हुई स्त्रियों द्वारा भी इस व्रत को किया जाता है । इस प्रकार इस व्रत–त्यौहार द्वारा संस्कृति तथा लोक–परम्पराओं की सुन्दर भावना का भी आदान–प्रदान होता है।

दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

घर आया दफ्तर, स्कूल....



कोरोना का कहर ऐसा है छाया,
बाजार दुकानों में ताला लगवाया,
सुनी सड़कें , खाली पुल...
घर आया दफ्तर – स्कूल।

रेलगाड़ी, बसों ने भी ब्रेक लगाया,
कोरोना की है ये कैसी माया,
फिर भी लॉगिन करना ना जाना भूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

दूर हो गए सब दोस्त यार,
मोबाइल से चल रहा व्यापार,
सोशल डिस्टेंसिंग आया है नया रूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

24 घंटे घर पर रहना,
हाथों को साबुन से धोना,
मास्क लगाकर बनना कूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

रामायण–महाभारत फिर से लगे आने,
बचपन के संगीत हम लगे गुनगुनाने,
ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बन गया मूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

लॉकडॉउन में कोई ना बाहर जाए,
मां ने घर पर ही पकवान बनाए,
मोबाइल लैपटॉप अब है गुरुकुल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

एक कमरे से दूसरे कमरे जाना,
घर के कपड़ों में आराम फरमाना,
फॉर्मल–यूनिफॉर्म पे पड़ गए धूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

सोफे–पलंग की जा रही जान,
चल रहा सिर्फ शर्ट से काम,
वीडियो कॉल में कहां दिखता है फुल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

डॉक्टर नर्स कर रहे रोगी की सेवा,
पुलिस के डंडे बता रहे, कोरोना है जानलेवा,
वैज्ञानिक लगे हैं बनाने में इसका कैप्सूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

मंदिर–मस्जिद सब हो गए बंद,
अर्थव्यवस्था पड़ गई मंद,
प्रकृति खिला रही नए फूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।

इन सब से ज्यादा परेशान हैं भाई मजदूर,
मीलों चलकर घर जाने को मजबूर,
हे महादेव !! अब तो उठाओ अपना त्रिशूल...
घर आया दफ्तर–स्कूल।



अपूर्वा श्री
वरिष्ठ लेखापाल







जो ना भीगा बरसात में

मिट्टी की सोंधी खुशबू, ना आये जिसकी बात में,
वो क्या सावन समझेगा, जो ना भीगा बरसात में ।

बैठ किनारे सोच रहा हो, दरिया के उस पार है क्या,
कैसे जान सकेगा बेचारा, आखिर मझधार है क्या,
सीपों के मोती कैसे आएंगे उसके हाथ में,
वो क्या सावन समझेगा, जो ना भीगा बरसात में,

पूछ लिया है, हमने सारे चलने, रुकने वालों से,
मंजिल तक वो ही पहुँचे, जो डरे न पग के छालों से,
वो जीते, जो कभी रुके ना आंधी झंझावात में,
वो क्या सावन समझेगा, जो ना भीगा बरसात में,

सच है गहरा सूनापन है, बहुत घनी अंधियारी है,
सूरज उसका, नैन में जिसने सारी रैन गुजारी है,
जिनमें ना धीरज था, वो सब दीपक बुझ गए रात में,
वो क्या सावन समझेगा, जो ना भीगा बरसात में,

हार जीत का अपरिमित क्रम, सदा रहा है जीवन में,
जो मन से जीते, वो जीते, हारे जो हारे मन में,
जिसने मन का साथ दिया, फिर दुनिया उसके साथ में,
वो क्या सावन समझेगा, जो ना भीगा बरसात में ।।



मैं गुजर जाऊंगा

काम कैसे भला मैं ये कर जाऊंगा,
अपने वादे से कैसे मुकर जाऊंगा,
इश्क हूँ मैं रहूँगा हमेशा तेरा,
मैं नशा तो नहीं, कि उतर जाऊंगा,

मेरी मंजिल भी तुम, रास्ता भी तुम्हीं,
तुम सफर हो तुम्हीं हमसफर हो मेरे,
तुम चलोगी जहाँ, मैं चलूँगा वहीं,
तुम रुकोगी वहीं मैं ठहर जाऊंगा,

सोचता था ये मुमकिन न होगा कभी,
मैं किसी मन के मंदिर की मूरत बनूँ,
संगमरमर नहीं, मैं हूँ पत्थर मगर,
तुमने गर छू लिया, मैं निखर जाऊँगा,

रंग लाएगी सोहबत हमारी अगर,
ना रहेंगे अलग एक दूजे से हम,
मेरी सोहबत में या तुम बिगड़ जाओगे,
तेरी सोहबत में या मैं सुधर जाऊंगा,

कुछ न पूछो कि कितनी दफा टूटकर,
मुस्कुराता हुआ मैं रहा हूँ सदा,
मैं संवर जाऊंगा तुम समेटो अगर,
ना समेटोगे तो मैं बिखर जाऊंगा,

कुछ भी होता मेरे नाम पर तो उसे,
मैं यकीनन तेरे नाम करता मगर,
कुछ नहीं है मेरे नाम पर इसलिए,
नाम अपना तेरे नाम कर जाऊंगा,



योगेश पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

देश की प्रतिभा.... देश के अंदर



किसी भी देश की शक्ति उसके नागरिकों से होती है, और अगर उस देश के नागरिक युवा हों, तो फिर सोने पे सुहागा हो जाता है। हमारा देश भारत एक ऐसा ही देश है। भारतीय जनसंख्या आयोग में तैयार किए गए सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम के रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में 25 वर्ष से कम आयु वाली आबादी लगभग 47% है व 35 वर्ष से कम आयु वाली आबादी लगभग 65% है। भारत के युवाओं की औसत आयु 29 वर्ष है, वहीं चीन के युवाओं की औसत आयु 37 वर्ष है। यह आँकड़ा किसी भी देश को प्रोत्साहित करने के लिए काफी है। यह आँकड़ा अनेक अवसर व आशा की किरण जगाने वाला है। लेकिन सिर्फ आँकड़ों से ही उम्मीदें पूरी नहीं होती, उम्मीदों को अवसरों में बदलना भी पड़ता है।

इसे भारत का दुर्भाग्य कहें या गलत नीतियों का असर कि हमारे प्रतिभावान और योग्य युवा, जो इस देश की ताकत हैं, जिनमें इस देश की उम्मीदों को अवसरों में बदलने की क्षमता है, वह अवसरों की तलाश में विदेश चले जाते हैं और इसे प्रतिभा–पलायन(ब्रेन ड्रेन) के नाम से जाना जाता है। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका में भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है।

भारत में बुनियादी शिक्षा (बेसिक एजुकेशन) में प्रायोगिक (प्रैक्टिकल) के बजाय सैद्धान्तिक (थियोरिटिकल) शिक्षा पर जोर दिया जाता है। इसका परिणाम यह है, कि देश के इंजीनियर बन कर निकले युवाओं में से केवल 20% के पास वो ज्ञान है जो आज की आवश्यकता के अनुरूप है और इनमें से कई युवा बेहतर अवसरों के लिए विदेश चले जाते हैं।

इस विषय में हम चीन से सीख सकते हैं। वह चीन जो कल ब्रेन ड्रेन के मामले में, भारत के करीब खड़ा था, आज उसने अपनी नीतियों में बदलाव कर के प्रतिभा के पलायन को काफी हद तक रोक लिया है। इसके लिए उसने अनुसंधान (रिसर्च) पर काफी जोर दिया साथ ही प्रायोगिक शिक्षा को बुनियाद बनाया, और नतीजा हमारे सामने है।

भारत के पास प्रतिभाओं की कमी नहीं है मगर ज़रूरत है उन प्रतिभाओं को पहचानने एवं उन्हें निखारने की, फिर चाहे वो कृषि के क्षेत्र में हो या विज्ञान के क्षेत्र में हमारे देश की प्रतिभाएं विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता रखती हैं। भारत सदैव ही कल्पनाओं एवं विचारों का केंद्र बिंदु रहा है। सीमित संसाधनों एवं कम बजट में लक्ष्य हासिल करने में भारत की क्षमता बेजोड़ है। हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम (स्पेस प्रोग्राम) इसका बहुत बड़ा उदाहरण हैं।

भारत सरकार के बजट में देश की प्रतिभाओं को देश के अंदर अवसर प्रदान कराने की घोषणाएं हुई हैं। कोरोना के इस काल में जहाँ लोगों की रोजी–रोटी दाँव पर लगी हुई है, वहीं लोगों में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। लोग आए दिन नई–नई तरकीबों से उत्पादनों की क्षमता का विस्तार भी कर रहे हैं। स्वदेशी वस्तुओं का उत्पादन व उसका विश्व भर में विख्यात होना चुनौतीपूर्ण ज़रूर है, लेकिन अगर सरकार का संपूर्ण सहयोग रहा और हमारे देश की प्रतिभाओं ने यह ठान लिया तो वह दिन दूर नहीं कि हम चीन व अन्य देशों की भांति अपने स्वदेशी उत्पादनों के लिए पूरे विश्व में मिसाल प्रस्तुत कर सकते हैं। साथ ही हमारे देश वासियों को भी स्वदेशी चीजों को बढ़ावा देना होगा। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा संकल्पित "वोकल फॉर लोकल" का पूर्ण सहयोग करना होगा।

अपूर्वा श्री
वरिष्ठ लेखापाल





(कोरोना के कारण हुए पहले लॉकडाउन के दौरान रचित)

कोरोना संघर्ष

मान रहा था मालिक ख़ुद को,
जो इंसां इस धरती का।
आज वही दुबका है घर में
भय भर मन एक विषाणु का।।

दिलवाली थी दिल्ली,
मतवाली सी मुम्बई थी।
हर चौबारा हर गली,
आज हो गई खाली सी।।

छिड़ी लड़ाई हर कोने में,
गृह प्रहरी बनकर लड़ना है।
चाहे कुछ हालात हों लेकिन
घर पर रहकर ही आगे बढ़ना है।।

जो लड़ रहे प्रथम पंक्ति में,
उनको सादर प्रणाम है।
खड़े हैं जीवन मृत्यु के मध्य,
उनको साँसों का सलाम है।।

होना नहीं है निराश "विशाल"
कि अंधेरा घनघोर विकट है।
हम निश्चय ही विजयी होंगे,
ऊषा की प्रथम रश्मि निकट है।।

विशाल शुक्ला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक :

वित्तीय शासन के क्षेत्र में संविधान और कानूनों को लागू करना



भारत के संविधान सभा में बहस के दौरान सदस्य श्री बी. दास ने कहा कि "हमारे प्रशासन की अखंडता को बनाए रखने के लिए संविधान ने तीन उपकरण प्रदान किए हैं । पहला है सुप्रीम कोर्ट और भारत के मुख्य न्यायाधीश, दूसरा ऑडिटर–जनरल, जो हमारे वित्त, व्यय और करों के संग्रह की शुद्धता को बनाए रखेगा; और तीसरा संघीय लोक सेवा आयोग है।"

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक "Comptroller & Auditor General of India" को भारत सरकार अधिनियम, 1935 में "ऑडिटर जनरल" कहा जाता था और इसका नाम भारत के संविधान द्वारा 26 जनवरी 1950 से भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था।

संविधान सभा के सदस्य श्री टी. टी. कृष्णमचारी ने संविधान सभा में बहस के दौरान कॉम्पट्रोलर "Comptroller" शब्द की प्रविष्टि के बारे में बताते हुए कहा कि "ड्राफ्ट संविधान में जो कार्य ऑडिटर–जनरल पर लागू होता है, वह न केवल ऑडिट है, बल्कि सरकार के खर्चों पर नियंत्रण भी है...। संविधान सभा संसद को ऑडिटर–जनरल के काम के दायरे को बढ़ाने के लिए सशक्त बना सकता है, यह उपयुक्त माना गया था कि ड्राफ्ट संविधान में ऑडिटर–जनरल का नामकरण इस तरह होना चाहिए कि उसके द्वारा प्रदान की गई शक्तियों के आधार पर उसे प्रदत्त सभी कर्तव्यों को सम्मिलित किया जा सके। ''

भारत के संविधान निर्माण में पर्याप्त सावधानी बरती गई ताकि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को कार्यपालिका से स्वतंत्र किया जा सके ताकि वह बिना किसी भय या पक्षपात के अपने कार्यों का निर्वहन कर सके।

सीएजी वित्तीय प्रशासन के क्षेत्र में संसद में कार्यपालिका की जवाबदेही को सुरक्षित करता है। वह अपने खातों और लेखा परीक्षा कार्यों के माध्यम से कार्यकारी पर विधायी नियंत्रण बनाने में मदद करता है। संसदीय वित्तीय नियंत्रण की योजना में ऑडिट एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह संविधान या किसी कानून का उल्लंघन करने वाले किसी भी खर्च को रोक सकता है और वह इस प्रकार वित्तीय प्रशासन के क्षेत्र में संविधान और कानूनों को बनाए रखता है। अधिकारियों द्वारा विवेक की किसी भी अनुचित कवायद को चुनौती देना और प्रतिबंधों और खर्च के औचित्य पर टिप्पणी करना उसका कर्तव्य है।

संविधान सभा में एक बहस में, मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने कहा, "..... (यह) गणमान्य या अधिकारी शायद भारत के संविधान का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी है। यह वह व्यक्ति है जो यह देखने वाला है कि संसद द्वारा निर्धारित खर्चों की सीमा को पार नहीं किया गया है और ये खर्च संसद द्वारा पारित विनियोग अधिनियम में उल्लिखित कार्यों पर ही किए गए हैं।"

इस प्रकार, अपनी योजना और रूपरेखा में, सीएजी एकमात्र संवैधानिक प्राधिकारी है जो वित्तीय प्रशासन के क्षेत्र में संविधान और कानूनों का धारक है।

विजय केसवानी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता



कहा जाता है कि – वैदिक युग में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। उन्हें यज्ञों में सम्मिलित होने, वेदों का पाठ करने तथा शिक्षा हासिल करने की आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद गार्गी, अपाला, घोषा, मैत्रेयी जैसी कई महिला विदुषियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। जैसा कि प्राचीन भारत में कहा जाता रहा है– यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। अर्थात् जहां स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं। स्मृतियों (खासकर मनुस्मृति) नें स्त्रियों पर पाबंदियां लगाना शुरु किया। यहीं से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आना शुरु हो गई। भारत पर इस्लामी आक्रमण के बाद तो हालात बद से बदतर हो गये। इसी समय पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, सती– प्रथा, जौहर और देवदासी जैसी घृणित धार्मिक रूढ़ियां प्रचलन में आईं। मध्ययुग में भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने के प्रयास जरूर किये, पर वो उस हद तक सफल नहीं रहे। सिर्फ चुनिंदा स्त्रियां जैसे कि, मीराबाई, अक्का महादेवी, रामी जानाबाई आदि ही इस आंदोलन का सफल हिस्सा बन सकीं। इसके तुरंत बाद सिख– धर्म प्रादुर्भाव में आया। इसने भी युध्द, नेतृत्व एवं धार्मिक प्रबंध समितियों में महिलाओं एवं पुरुषों की बराबरी के उपदेश दिये। अंग्रेजी शासन ने अपनी तरफ से महिलाओं की स्थिति को सुधारने के कोई विशेष प्रयास नहीं किये, लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य में उपजे अनेक धार्मिक सुधारवादी आंदोलनों जैसे– ब्रह्म समाज (राजा राम मोहन राय), आर्य समाज (स्वामी दयानंद सरस्वती), थियोसोफिकल सोसाइटी, रामकृष्ण मिशन(स्वामी विवेकानंद), ईश्वरचंद्र विद्यासागर(स्त्री–शिक्षा), महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले (दलित स्त्रियों की शिक्षा) आदि ने अंग्रेजी सरकार की सहायता से महिलाओं के हित में सती प्रथा का उन्मूलन, 1829 (लार्ड विलियम बेंटिक) सहित कई कानूनी प्रावधान पास करवाने में सफलता हासिल की। इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद इस दौर में युध्द, राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म से कुछ सुप्रसिध्द स्त्रियों के नाम उभरकर सामने आते हैं। जिनमें से रजिया सुल्तान (दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला साम्राज्ञी), गोंड की महारानी– दुर्गावती, शिवाजी महाराज की माता– जीजाबाई, कित्तूर की रानी– चेन्नम्मा, कर्नाटक की महारानी– अब्बक्का, अवध की सह– शासिका बेगम हजरत महल, आगरा की नूरजहां तथा झांसी की महारानी –लक्ष्मीबाई के नाम प्रमुख हैं। भारत का पहला महिला महाविद्यालय बिथयून कालेज, 1879 में खुला। जिससे चंद्रमुखी बसु, कादंबिनी गांगुली और आंनदी गोपाल जोशी नें वर्ष 1886 में शुरुआती शैक्षणिक डिग्रियां प्राप्त कीं थीं।

आज आजादी के 73 सालों बाद भी भारत में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। आधुनिकता के विस्तार के साथ–साथ देश में दिन– प्रतिदिन बढ़ते महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या के आंकड़े चौकाने वाले हैं। उन्हें आज भी कई प्रकार के धार्मिक रीति–रिवाजों, कुत्सित रूढ़ियों, यौन अपराधों, लैंगिक भेदभावों, घरेलू हिंसा, निम्नस्तरीय जीवनशैली, अशिक्षा, कुपोषण, दहेज उत्पीड़न, कन्या भ्रूणहत्या, सामाजिक असुरक्षा तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में रक्षा और प्रशासन सहित लगभग सभी सरकारी तथा गैर–सरकारी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, उनकी स्वायत्तता तथा अधिकारों का कानूनी एवं राजनैतिक संरक्षण, तेजी से बदलते सकारात्मक सामाजिक नजरिये, सुधरते शैक्षणिक स्तर, अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में उनकी प्रतिभागिता एवं कौशल तथा सिनेमा, रचनात्मकता, व्यापार, संचार, विज्ञान तथा तकनीकी जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कई बड़े बदलाव भी देखने में सामने आये हैं। लेकिन यह महज शुरुआत भर है। जब तक समाज के प्रत्येक वर्ग में महिलाओं की पुरुषों के बराबर भागीदरी सुनिश्चित नहीं हो जाती, वे हर प्रकार से शिक्षित, सुरक्षित तथा संरक्षित नही हो जातीं, तब तक हमारी आजादी अधूरी मानी जायेगी।

हालांकि कुछ महिलायें इन सभी चुनौतियों से पार पाकर विभिन्न क्षेत्रों में देश के सम्माननीय स्तरों तक भी पहुंची हैं, जिनमें श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, सुषमा स्वराज, निर्मला सीतारमण, महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, अमृता प्रीतम, लता मंगेशकर, सुश्री मायावती, जयललिता, ममता बनर्जी, मेधा पाटकर, अरुंधती रॉय, चंदा कोचर, पी.टी. ऊषा, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, साक्षी मलिक, पी. वी. सिंधू, हिमा दास, झूलन गोस्वामी, स्मृति मंधाना, मिथाली राज,

गीता फोगाट, मैरी कॉम, लड़ाकू विमान पायलट में भावना कंठ, अवनी चतुर्वेदी और मोहना सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

बीते दिनों मुस्लिम महिलाओं में प्रचलित निकाह– हलाला तथा तीन तलाक जैसे पुरातन कुप्रथा के विरुद्ध महिला अधिकार संरक्षण कानून 2019 बिल के मुताबिक एक समय में तीन तलाक देना अपराध है। इसलिए पुलिस बिना वारंट के तीन तलाक देने वाले आरोपी पति को गिरफ्तार कर सकती है। एक समय में तीन तलाक देने पर पति को तीन साल तक कैद और जुर्माना दोनों हो सकता है। हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर–प्रदेश आदि में कन्या–भ्रूणहत्या को रोककर लिंग अनुपात के घटते स्तर को संतुलित करने तथा शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति सुधारने के प्रक्रम को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना चलाई जा रही है। राजनीतिक भागीदारी हेतु महिलाओं को पंचायत एवं नगरीय निकाय में आरक्षण प्राप्त है।

एक शिक्षित स्त्री न केवल अपना बल्कि परिवार की तीन पीढ़ियों का सर्व–कल्याण कर सकती है। इसलिए शिक्षा को केन्द्र बनाकर तथा समुचित साधन और कानूनों का पालन सुनुश्चित करके देश को महिला अपराध मुक्त बनाया जा सकता है। चूंकि भारत निकट भविष्य में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनने को प्रगतिशील है, इसलिए 'महिला सशक्तिकरण' पर भी ध्यान देना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो लैंगिक समानता और संतुलित अर्थव्यवस्था लाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती हैं।



प्रेम प्रकाश यादव
डी. ई. ओ.

वृक्षारोपण अभियान







...कान की व्यथा...



हम हैं कान... हम दो हैं... जुड़वां भाई...
लेकिन हमारी किस्मत ही ऐसी है
कि आज तक हमने अपने दूसरे
भाई को देखा तक नहीं
पता नहीं.. कौन से शाप के कारण
हमें विपरीत दिशा में चिपका कर भेजा गया है।
दु:ख सिर्फ इतना ही नहीं है...
हमें जिम्मेदारी सिर्फ सुनने की मिली है..
गालियाँ हों या तालियाँ... अच्छा हो या बुरा...
सब हम ही सुनते हैं...

धीरे-धीरे हमें खूंटी समझा जाने लगा...
चश्मे का बोझ डाला गया,
फ्रेम की डण्डी को हम पर फँसाया गया...
ये दर्द सहा हमने...
क्यों भाई..???
चश्मे का मामला आंखो का है
तो हमें बीच में घसीटने का मतलब क्या है...???
हम बोलते नहीं तो क्या हुआ, सुनते तो हैं ना...
हर जगह बोलने वाले ही क्यों आगे रहते हैं....???

बचपन में पढ़ाई में किसी का दिमाग काम न करे तो
मास्टर जी हमें ही मरोड़ते हैं...

जवान हुए तो आदमी, औरतें सबने सुन्दर सुन्दर
लौंग,बालियाँ, झुमके आदि बनवाकर हम पर ही लटकाये...!!
छेदन हमारा हुआ, और तारीफ़ चेहरे की ...!

और तो और...श्रृंगार देखो...
आँखों के लिए काजल...
मुँह के लिए क्रीमें...
होठों के लिए लिपस्टिक...
हमने आज तक कुछ माँगा हो तो बताओ...
कभी किसी कवि ने, शायर ने
कान की कोई तारीफ़ की हो तो बताओ...
इनकी नज़र में आँखे, होंठ, गाल, ये ही सब कुछ है...
हम तो जैसे किसी मृत्युभोज की बची खुची दो पूड़ियाँ हैं...
जिसे उठाकर चेहरे के साइड में चिपका दिया बस...

और तो और,कई बार बालों के चक्कर में
हम पर भी कट लगते हैं...
हमें डिटाल लगाकर पुचकार दिया जाता है...

बातें बहुत सी हैं, किससे कहें...???
कहते हैं दर्द बाँटने से मन हल्का हो जाता है...
आँख से कहूँ तो वे आँसू टपकाती हैं...
नाक से कहूँ तो वो बहाता है...
मुँह से कहूँ तो वो हाय हाय करके रोता है...

और बताऊँ...पण्डित जी का जनेऊ,
टेलर मास्टर की पेंसिल,
मिस्त्री की बची हुई गुटखे की पुड़िया
सब हम ही सम्भालते हैं...

और आजकल ये नया नया मास्क
का झंझट भी हम ही झेल रहे हैं...
कान नहीं जैसे पक्की खूँटियाँ हैं हम...
और भी कुछ टाँगना, लटकाना हो
तो ले आओ भाई... तैयार हैं हम दोनों भाई... ।।



मोहम्मद जफर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नर्स को समर्पित



नर्स आप सिस्टर हो या परी
जन्म लेते ही माँ से पहले
गोदी में आप हमको लेती
प्यार और ममता के साथ
देखभाल करती हो हमारी
बिन रिश्ते निभाती हो अपना फर्ज
हम पर चढ़ाती हो जन्मों–जन्मों का कर्ज
आपके इतने हम पर उपकार
जिसके लिए तुच्छ सारा उपहार
हर पल बीमार,घायल आदि की सेवा करती
समय–समय पर संजीवनी देकर
उन्हें जीवनदान आप देती
जब इंसान की ज़िन्दगी
मौत से जूझती रहती
I.C.U. के अकेलेपन में
नर्स ही हाल पूछती रहती
नाइट डयूटी में आपकी आँखें झूलती नजर आती
पर इमरजेंसी आ जाए तो
पीटी उषा आप बन जाती
आज वह काला दिन आ गया
सारा जग कोरोना महामारी से त्रस्त हो गया
आज मौत का दूसरा नाम बना कोरोना
इस विपदा में आप देवदूत बन घर–घर आयी
अपने साथ मरीजों को हॉस्पिटल ले आयी
दिया संजीवनी किया खूब सेवा
जीवनदान देकर वापस घर आप पहुंचायी
हम जानते आपकी सेवा के आगे
कोरोना को एक दिन झुकना पड़ेगा
इसी तरह आप डटी रहें
हम सबों की दुआ आपको लगती रहे
हम भारतीय घर बैठे
आपकी कुशलता की प्रार्थना करते
और आपको शत–शत नमन करते



विकास कुमार
एम.टी.एस.

लॉकडाउन के फायदे व लॉकडाउन के नुकसान



लॉकडाउन अर्थात तालाबंदी। इसके तहत सभी को अपने-अपने घरों में रहने की सलाह दी गई है जिसका सरकार की तरफ से कड़ाई से पालन भी करवाया जा रहा है। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि कोरोना वायरस नामक महामारी मानव जाति के इतिहास में पहली बार आई है।

अब पूरा देश इस वायरस से लड़ने के लिए अपने-अपने घरों में कैद हो गया है। इस महामारी के प्रकोप से लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वो है सोशल डिस्टेंसिग यानी कि सामाजिक दूरी। यह संक्रमण एक से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलता है जिसके कारण भारत सरकार ने लॉकडाउन को ही इससे बचने के लिए आवश्यक कहा है।



अर्थात लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है, जो किसी आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है। जिस इलाके में लॉकडाउन किया गया है, उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती है। उन्हें सिर्फ दवा और खाने-पीने जैसी जरूरी चीजों की खरीददारी के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है। लॉकडाउन के वक्त कोई भी व्यक्ति अनावश्यक कार्य के लिए सड़कों पर नहीं निकल सकता।

लॉकडाउन के फायदे:

लॉकडाउन से पहले के समय की बात करें तो उस वक्त हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए, अपने परिवार के लिए व बच्चों के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे और सभी की सिर्फ यही शिकायत रहती थी कि आज की दिनचर्या को देखते हुए समय किसके पास है। लेकिन लॉकडाउन से ये सारी शिकायतें खत्म हो गई हैं। इस दौरान अपने परिवार के साथ बिताने के लिए लोगों को बेहतरीन पल मिले हैं। कई प्यारी-प्यारी यादें इस दौरान लोग सहेज रहे हैं, अपने घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता रहे हैं और रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान बच्चों को अपने माता-पिता के साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है, वहीं जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वे यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं। पुराने धारावाहिकों का दौर वापस आ गया है जिसका मजा लोग अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर ले रहे हैं और अपनी पुरानी यादों को वापस से जी रहे हैं। बच्चों के साथ वीडियो गेम्स, कैरम जैसे गृहखेल का बड़ों ने आनंद लिया। विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण घर बैठकर शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रुकावट न आए।

लॉकडाउन के समय लोग अपने शौक को भी पूरा कर रहे हैं, क्योंकि उनको इसके लिए अपनी खुद की दबी इच्छाओं को पूरा करने का समय मिला है। जो लोग डांस सीखने के शौकीन थे और समय की कमी के कारण नृत्य कला को कहीं-न-कहीं खुद से दूर कर रहे थे, आज वे अपने इस हुनर को निखार रहे हैं। जिन्हें म्यूजिक का शौक है, वो म्यूजिक सीख रहे हैं, जिन्हें पेंटिंग का शौक है वे पेंटिंग सीख रहे हैं। ऐसे कई शौक लॉकडाउन के दौरान वापस से जी रहे हैं।



लॉकडाउन के रहने से कोरोना वायरस, जिससे पूरा विश्व परेशान है, से छुटकारा पाया जा सकता है इसलिए यह हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। हमारा काम सिर्फ इतना है कि हमें इसका पालन पूरी ईमानदारी के साथ करना है। साथ ही लॉकडाउन से कोरोना वायरस के मरीजों में गिरावट आएगी और संक्रमण फैलने का खतरा कम होगा। हमारी रोजमर्रा की ज़िंदगी की चीजों में कमी न हो इसलिए किराने की चीजें, फल, सब्जी, दवाइयां बाजार में उपलब्ध हैं।

लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में कमी हुई है। अगर लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकलने वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था, गाड़ियों के रास्तों पर दौड़ने से ध्वनि और वायु प्रदूषण हो रहे थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से इन सभी चीजों में कमी आई है और आज चिड़ियों की चहचहाहट हमारे आंगन में वापस से सुनाई दे रही है, जो कहीं खो-सी गई थी। नदियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा है।

लॉकडाउन के नुकसान :

लॉकडाउन की वजह से मजदूरों को बहुत नुकसान हुआ है, जो रोजमर्रा के काम से अपने परिवार का पेट पालते थे। आज उनके लिए एक वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल हो गई है। कई मजदूर ऐसे हैं, जो भूखे पेट ही सो रहे हैं। अगर लॉकडाउन का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को हुआ है तो वह है मजदूरों का जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं।

लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ है। कारखानों को बंद रखने के कारण भारी नुकसान वहन करना पड़ रहा है, वहीं व्यापार भी पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है। लोगों की नौकरियां चली गई हैं जिसकी वजह से बेरोजगारी की समस्या भी उत्पन्न हो गई है। लॉकडाउन की वजह से देश आर्थिक रूप से कमजोर पड़ रहा है।

दिन-रात सिर्फ कोरोना से संबधित खबरें लोगों को मानसिक रूप से परेशान कर रही हैं, जो उन्हें नकारात्मक बना रही हैं। पूरे दिन घर पर रहने और शारीरिक व्यायाम न होने से लोग खुद को स्वस्थ भी महसूस नहीं कर पा रहे हैं। बच्चे भी पूरे दिन घर पर रहकर चिड़चिड़ापन महसूस करने लगे हैं, क्योंकि वे बाहर खेलने हेतु अपने दोस्तों के साथ मिलने में असमर्थ हैं। कोरोना वायरस की खबरें लोगों को परेशान कर रही हैं जिससे कई लोग अवसाद जैसी समस्या से भी जूझ रहे हैं।

कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए इस संक्रमण से मुक्ति के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने लॉकडाउन की घोषणा की थी, क्योंकि सामाजिक दूरी ही कोरोना को रोकने के लिए कारगर उपाय है। यही कारण है कि समय समय पर लॉकडाउन को बढ़ाया जा रहा है। इसलिए हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम इस निर्णय का पूर्ण समर्थन करते हुए हम लॉकडाउन का पूरा पालन करें और इस वायरस को जड़ से मिटा दें। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी ईमानदारी के साथ पालन करना ही हमारा कर्तव्य है, तभी इस महामारी को खत्म किया जा सकता है।

ए श्रीराम मूर्ती
वरिष्ठ लेखापाल

राधा तो केवल एक बहाना था।





राधा तो केवल एक बहाना था।
कान्हा तुझे तो इस धरा पर
मानवता की रक्षा हेतु आना था।
पर लोगों को तो केवल राधेश्याम-राधेश्याम गाना था।

जब-जब पृथ्वी पर मानवता की हत्या होती चली गई।
तब तब तेरा हृदय भी पीड़ा से क्रंदन करता चला गया।
सत्य तो यह है कि मानवता की रक्षा हेतु
तूने इस धरा पर ना जाने कितनी बार जन्म लिया।
राधा तो केवल एक बहाना है।
पर लोगों को तो केवल राधेश्याम-राधेश्याम गाना है।

मनुष्य मानवता जब-जब भूलकर
अमानवीय कृत्य करने लगे।
दुखी जन, जब जब करुणामय नयन से
तेरी ओर निहारने लगे।

तब-तब तू इस धरा पर
विभिन्न रूप में पदार्पित होता आया है।
और पाशविक कृत्य करते मानव रूपी असुरों का
इस धरा से नाश करता चला गया है।

तू पूर्व में भी त्रेता युग में सीता हेतु नहीं
अपितु रावण का वध करने आया था।
सीता तो एक बहाना था
पर लोगों को तो केवल जय सियाराम-जय सियाराम
गाना था।

तूने कभी अगड़े को राम बनकर
तो कभी पिछड़े को श्याम बनकर मैया कह पुकारा था।
ना भेद किया था अगड़ो पिछड़ों के बीच।
दोनों के घर का दुलारा था।
भेद नहीं है मानव में यही शिक्षा देने
तू इस धरा पर आया था।
राधा व सीता तो केवल यह बहाना था।
तू तो मानव में भेद मिटाने आना था।
पर लोगों को तो केवल कभी जय सियाराम,
तो कभी राधेश्याम गाना था।

फिर हम मानव ने निश्चय किया है
अमानवीय कृत्य की नई गाथा गढ़ने को।
ताकि तेरा कलयुग में पुनः पदार्पण हो
कल्कि रूप में मानवता की पुनः रक्षा करने को।
फिर से मानव को बहाना मिल जाए
तुझे पुनः जय सियाराम राधेश्याम पुकारने का।

कलयुग के कंसों और जरासंधों ने डाल रखी है
विषाक्त सर्प, पलाश पेड़ की डाली पर।
उन्हें आशा है वह सर्प तुझे इस बार डस लेगा,
जैसे ही तू फूल तोड़ राधा के लिए
माला पिरोने जाएगा इस बार की होली पर।

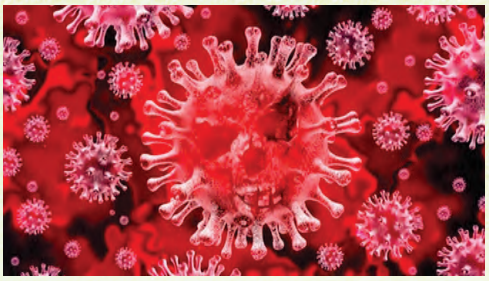
पर तू तो मंद-मंद मुस्कुरा रहा होगा
कलयुग के कंस और जरासंध के षडयंत्रकारी नीति पर।
उन मूर्खों को क्या ज्ञात है जिसने ब्रह्मांड को खुद बुना है,
उन्हें कोई कैसे फाँस सकता है षडयंत्रकारी जालों पर।

हर युग में ऐसे कंस और जरासंध षडयंत्र कर मिटते आए हैं।
इस बार भी उनका षडयंत्र धरा का धरा रह जाएगा
और वे स्वयं इस धरा में ही फिर से मिट जाएंगे।
और लोग पुनः राधेश्याम-राधेश्याम गाएंगे।



शुभंकर राय चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इस दुनिया में जब से फैला, चाईना से कोरोना





गम में डूबा हुआ है, धरती का कोना–कोना,
इस दुनिया में जब से फैला, चाईना से कोरोना ।
जाने कितने बेरोजगार हुए,
भूखे नंगे लाचार हुए।
मजदूर हुए पलायन को मजबूर,
किसी का सफर था मुश्किल, किसी की थी मंजिल दूर ।
क्रिकेट का मैदान हो गया है सूना–सूना ,
इस दुनिया में जब से फैला , चाईना से कोरोना ।
बच्चों के स्कूल बंद , उनकी पढ़ाई–लिखाई हो गई मंद ,
माँ–बाप हो रहे परेशान, कहीं निरंक न हो जाए उनका बचा हुआ ज्ञान ।
दुष्कर हो गया लोगों का बाहर आना–जाना ,
इस दुनिया में जब से फैला, चाईना से कोरोना।
पार्टी न हो पाने से दुखी सभी हैं साथी,
कैसे जाऊँ बाहर क्यूंकि पुलिस लेकर खड़ी है लाठी।
न जाने कितनों को खो चुके हैं , कितनों को है खोना ।
इस दुनिया में जब से फैला, चाईना से कोरोना ।
जरा संभलकर रहना भाई, घड़ी कठिन है आई।
साबुन , मास्क और सेनेटाइजर के चक्कर में लुट रही है कमाई।
सामाजिक–दूरी और दिन–भर हाथ है धोना,
इस दुनिया में जब से फैला, चाइना से कोरोना ।



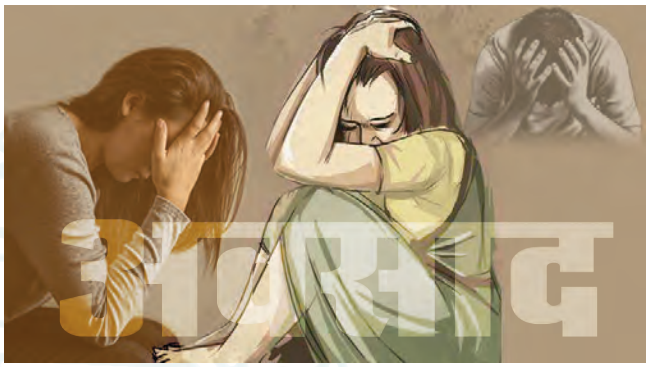


प्रेम प्रकाश यादव
डी. ई. ओ.

अवसाद



अवसाद जो आज कल हमारी जिंदगी का अहम् हिस्सा बनता जा रहा है, जो हर पल हर वक्त हमारे साथ रहने लगा है, जो धीरे धीरे हमारा गहरा मित्र बनता जा रहा है और हमें पता भी नहीं चल रहा है । अब हमारे मित्र यह सोचने लगे होंगे कि ये अवसाद है क्या और ये हमारा दोस्त कैसे बन रहा है ? हम लोग हैं तो हिंदुस्तान में परन्तु हम हिंदी से ज्यादा अंग्रेजी पर आश्रित हैं। ऐसा मैंने इसलिए कहा है, क्योंकि अवसाद का मतलब हम सभी को मालूम है लेकिन इंग्लिश में अवसाद मतलब डिप्रेशन। कई लोग समझते हैं की डिप्रेशन मतलब पागल होना होता है लेकिन ऐसा नहीं है डिप्रेशन दिमाग की बीमारी नहीं बल्कि हमारी सोच की बीमारी है और ये समस्या सिर्फ उन लोगों को नहीं होती है जो ज्यादा सोचते है या फिर ज्यादा तनाव में रहते है बल्कि ये आज कल आम बात होती जा रही है और सभी वर्ग के लोगों को होती है और इसमें हमारे बच्चे भी शामिल है आज कल की हमारी जीवन शैली ही ऐसी हो गयी है कि हम अपने परिवार और दोस्तों से कम और अपने मोबाइल में जयादा व्यस्त



हो गए हैं ज्यादा वक्त मोबाइल में गुजार रहे हैं। हम अपने आप को हर उस खुशी से दूर करते जा रहे है जिससे हमें ज्यादा आनंद मिलता है। आज कल हर जगह दौड़ लगी हुई है बहुत कुछ पाने के चक्कर में हम अपने आप को खोते जा रहे है और धीरे धीरे डिप्रेशन का शिकार होते जा रहे हैं। डिप्रेशन कोई कमजोरी नहीं होती है कि आप इससे बाहर न निकल पायें। हम इससे बाहर निकलने में डाक्टर की मदद ले सकते हैं। अवसाद पुरुषों की तुलना में महिलाओं में ज्यादा होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि महिलाएं अपना सारा वक्त घर पर बिताती हैं और शारीरिक गतिविधियाँ कम करती हैं। घर की सारी मुश्किलें महिलाएं अपने ऊपर ले लेती है और सारा वक्त उनके बारे में सोचते–सोचते व्यतीत करती है।

हम सभी को ज़्यादा से ज़्यादा शारीरिक गतिविधि करनी चाहिए। हम पुरुष दफ्तर जाते हैं, बाजार जाते हैं, कई लोगों से मिलते हैं, बात करते हैं। इसी बहाने कुछ वक्त के लिए अपना ध्यान किसी दूसरी ओर लगाते हैं। पर महिलाओं में ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। जिस तरह उम्र बढ़ने के साथ महिलाएं अपने आप को खोती जा रही हैं उन्हें इस बात का पता भी नहीं चलता कि क्या करने से उनको खुशी मिलेगी। इसलिए दोस्तों ! पहले अपने आप को वक्त दें, संगीत सुनें, बच्चों के साथ खेलें , योग करें, लोगों के साथ बात करें, घूमने जाएँ। वे सारी चीजें करें जो आप स्कूल और कॉलेज के वक्त किया करते थे बस अपने आप को खुश रखें और दिमाग पर ज़्यादा ज़ोर न दें क्योंकि –

चिंता करके क्या पायेगा
मरने से पहले ही मर जाएगा



मोहम्मद जफर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वयं का मूल्य जानिए



एक शहर में बहुत ही ज्ञानी प्रतापी साधु महाराज आये हुए थे। बहुत से दीन–दुखी, परेशान लोग उनके पास उनकी कृपा दृष्टि पाने हेतु आने लगे। ऐसा ही एक दीन दुखी, गरीब आदमी उनके पास आया और साधु महाराज से बोला "महाराज में बहुत ही गरीब हूँ, मेरे ऊपर कर्ज भी है, मैं बहुत ही परेशान हूँ। मुझ पर कुछ उपकार करें।"

साधु महाराज ने उनको एक चमकीला नीले रंग का पत्थर दिया, और कहा 'कि यह कीमती पत्थर है, जाओ जितनी कीमत लगवा सको, लगवा लो।' वह आदमी वहां से चला गया और उसे बेचने के इरादे से अपने जान पहचान वाले एक फल विक्रेता के पास गया और उस पत्थर को दिखाकर उसकी कीमत जाननी चाही। फल विक्रेता बोला "मुझे लगता है ये नीला शीशा है, महात्मा ने तुम्हें ऐसे ही दे दिया है, हाँ यह सुन्दर और चमकदार दिखता है, तुम मुझे दे दो, इसके मैं तुम्हें 1000 रुपए दे दूंगा।" वह आदमी निराश होकर अपने एक अन्य जान पहचान वाले के पास गया जो कि एक बर्तनों का व्यापारी था। उसने उस व्यापारी को भी वह पत्थर दिखाया और उसे बेचने के लिए उसकी कीमत जाननी चाही। बर्तनों का व्यापारी बोला "यह पत्थर कोई विशेष रत्न है, मैं इसके तुम्हें 10,000 रुपए दे दूंगा। वह आदमी सोचने लगा कि इसकी कीमत और भी अधिक होगी और यह सोचकर वह वहां से चला आया।"

उस आदमी ने इस पत्थर को अब एक सुनार को दिखाया, सुनार ने उस पत्थर को ध्यान से देखा और बोला ये काफी कीमती है इसके लिए मैं तुम्हें 1,00,000 रूपये दे दूंगा। वो आदमी अब समझ गया था कि यह बहुत अमुल्य है, उसने सोचा क्यों न मैं इसे हीरे के व्यापारी को दिखाऊं, यह सोच वो शहर के सबसे बड़े हीरे के व्यापारी के पास गया। उस हीरे के व्यापारी ने जब वो पत्थर देखा तो देखता रह गया। चौंकने वाले भाव उसके चेहरे पर दिखने लगे। उसने उस पत्थर को माथे से लगाया और और पूछा तुम यह कहाँ से लाये हो ? यह तो अमूल्य है। यदि मैं अपनी पूरी सम्पति बेच दूँ तो भी इसकी कीमत नहीं चुका सकता।

हम अपने आप को कैसे आँकते हैं ? क्या हम वो हैं जो राय दूसरे हमारे बारे में बनाते हैं ? आपका जीवन अमूल्य है आपके जीवन का कोई मोल नहीं लगा सकता। आप वो कर सकते हैं जो आप अपने बारे में सोचते हैं। कभी भी दूसरों के नकारात्मक टिप्पणियों से अपने आप को कम मत आंकिये ।



मोहम्मद जफर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक





माँ भारती को समर्पित



हमारा पालन-पोषण करने वाली
अच्छे संस्कार देने वाली
जग में सबसे प्यारी
माँ भारती हमारी
हमें सिखलाई सबका आदर करना
किसी से मिलने पर नमस्ते करना
आपने दी हमें सोलह संस्कार
जिसमे अंतिम दाह संस्कार
इसमें हम मृत शरीर को
अग्नि से शुद्ध करते
उसके बाद पुनः पाँच तत्वों को वापस कर देते
जिससे प्रकृति का संतुलन बनता
पूजा-पाठ कर मन शांत करते
जग को शांति का संदेश देते
इतिहास गवाह रहा हमारा
हमने किसी देश पर आक्रमण न किया
ज्ञान-विज्ञान में भी पीछे होने ना दिया
माँ आपके आशीर्वाद से कुछ ऐसा हो पाया
आर्यभट्ट ने जीरो खोजा
तुलसीदास ने पृथ्वी-सूर्य की दूरी
ISRO ने रचे कई सारे इतिहास
इसी तरह हमने किए बहुत सारे चमत्कार
माँ आपने ऐसा संस्कार दिया
हमने प्रकृति से न खिलवाड़ किया
स्वस्थ रहने के लिए आयुर्वेद, योग अपनाया
माँ एक पड़ोसी देश कर बैठा
प्रकृति के साथ खिलवाड़
जिससे उत्पन हुई कोरोना महामारी
इसे भुगत रहा सारा संसार
आज बना मौत का दूसरा नाम कोरोना
जग बचाने भारत सबसे पहले आगे आया
पैरासिटामोल और HCQ जैसे संजीवनी लाया
जिससे हुआ अमेरिका, ब्रिटेन जैसे
तीस से ज्यादा देशों का कल्याण
कम खर्च और सीमित संसाधन में
बायो सूट, N-95 मास्क,
इंफ्रारेड स्केनर आदि विकसित किया
हम रोज कोरोना से लड़ने के लिए
नए-नए हथियार बनाते
माँ हम आपके आशीर्वाद से
जल्द जादुई गोली और वैक्सीन बना कर
इस जग से कोरोना को हरा कर
माँ फिर से आपको विश्व गुरू बना देंगे ।

विकास कुमार
एम.टी.एस.

ये सोचने का विषय है



यह छोटा सा लेख उन कोरोना योद्धाओं के लिए है जो हाथों में दस्ताने मुँह पर मुखौटा धारण कर समय–समय पर सेनिटाइजर लगा कर एक दम योद्धा की भाँति नजर आते हैं। लोग इस महामारी से बहुत ही ज्यादा भयभीत हैं तथा हथियारों से लैस होकर कोरोना से स्वयं की रक्षा करते नजर आते हैं ।

क्या ये योद्धा इन हथियारों के साथ अपने प्रियजन अथवा साथियों के कोरोना पीड़ित होने पर उनकी मदद कर पायेंगे? नहीं, ये उनसे दूर चले जायेंगे ।

क्या इनके अन्दर कुछ कमजोरियाँ हैं जिसके कारण ये भयभीत होकर योद्धा का वेष बनाये हुए हैं ? हाँ इनके अंदर कुछ कमजोरियाँ हैं और वे कमजोरियाँ हैं आधुनिक जीवन शैली से जुड़ी बीमारियाँ जैसे रक्तचाप, मधुमेह, गठिया, कैंसर, अस्थमा एवं कम प्रतिरक्षा आदि ।

ये प्रश्न हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम कोरोना से जितने जागरूक हैं उतने जागरूक इन बीमारियों से नहीं हैं क्या ? हम आराम, सुख सुविधाओं से भरी जिन्दगी के लिए जद्दो–जहद करने में यह भूल गये हैं कि भगवान ने इंसान को



इस संसार के सभी जानवरों से अलग दो चीजें दी हैं । एक–इंसान के दो हाथ और दूसरा–सब जानवरों से ज्यादा बुद्धि। जो इसलिए है कि हम खूब मेहनत करें और अपने से कमजोर जानवरों की मदद करें। परन्तु हम तो भगवान की इस देन को केवल अपनी सुख सुविधाओं को जुटाने में लगा रहे हैं और शरीर रूपी मशीन को जंग लग रहा है। इसका नतीजा क्या हो रहा है ये कोरोना काल ने दिखा दिया है। इस कोरोना काल ने हमें अहसास कराया है कि हमने दो चीजें पूरी तरह से खो दी हैं। एक अच्छा स्वास्थ्य और दूसरा इन्सानियत ।

क्या मुखौटे, दस्ताने आदि धारण कर तथा अपनों से दूरी बना कर रखने के पीछे यह भय नहीं हैं कि हमने अपने अंदर बहुत सी बीमारियाँ पाल रखी हैं। जिसके कारण अब हमारा शरीर कोरोना से लड़ने लायक नहीं रहा। यह सोचने का विषय है कि जब इसकी वजह सबको पता है, तो क्या कारण है कि उन बीमारियों के लिए कोई सावधानी नहीं बरती जाती। इन बीमारियों के आने के पूर्व भी अगर हम इसी तरह जागरूक होकर एहतियात के साथ जीवन जीते तो आज इतने कमजोर न होते। गलत खान–पान, व्यायाम की कमी तथा आधुनिक वस्तुओं के अत्यधिक उपयोग के कारण हम खुद अपनी जीवन शैली बिगाड़ रहे हैं तो आने वाली पीढ़ी को क्या सिखायेंगे । प्रकृति से दूर होकर सुख सुविधाओं भरा जीवन जीना, अंग्रेजी बोल कर, टाई–कोट पहन कर, वातानुकूलित कमरों में प्रकृति से दूर एकाकी बैठ कर गौरवान्वित महसूस करना, प्रकृति को नष्ट कर अपनी सुख सुविधायें जुटाना जिससे स्वास्थ्य तो खराब होता ही हैं इन्सानियत भी नहीं बचती। जिसके कई उदाहरण देखने को मिल रहे हैं।

अगर हमें अपने स्वास्थ्य को और अपनी अगली पीढ़ी को बचाना है तो भगवान की दी हुई दो विशेष चीजों का सही इस्तेमाल करना होगा। हाथों से कठिन शारीरिक श्रम और बुद्धि से जीवों से स्नेह करना होगा। अपनी सोच बदल कर अपना स्वास्थ्य और इन्सानियत को बचाना होगा। इसके लिए हमारे पास एक भरपूर सांस्कृतिक धरोहर हैं जिसको अपनाकर एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन बनाया जा सकता हैं। और अंत में–

दुर्लभ मनुष्य जनम है , देह न बारम्बार।

तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार ।।

श्रीमति लेखा उदयन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



गाँधी: कल आज और हमेशा



"आने वाली पीढ़ियाँ शायद ही कभी यकीन कर पायेंगी कि हाड़–मांस का कोई ऐसा व्यक्ति भी कभी धरती पर जीवित था"–अल्बर्ट आइंस्टाइन (गाँधी जी के लिये)

"यदि मुझे मौका दिया जाये किसी एक ऐसी शख्सियत से मिलने का जो आज धरती पर जीवित नहीं है तो मैं गांधी जी से मिलना चाहूंगा"– बराक ओबामा

जिस व्यक्ति के सम्मान में ये बातें इन महान हस्तियों द्वारा कही गयी हैं उन्हें हमने इतना सम्मान दिया कि उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। आजादी चरखे से नहीं मिली ऐसा कहने वालों की संख्या बहुत अधिक हो चुकी है जबकि अंग्रेज इतिहासकार लुई फिशर कहते हैं कि अगर उस अंग्रेज के बच्चे को ज़रा भी यह अंदाजा होता कि जिस गांधी को वह ट्रेन के डब्बे से बाहर फेंक रहा है वह एक दिन अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ कर फेंक देगा तो वह भूल से भी ऐसा नहीं करता।

अब यह कहने वाले लोग भी बहुतायत में मिल जाएंगे कि गाँधीजी को ही राष्ट्रपिता क्यों मानें ? उन्होंने ऐसा क्या किया ? भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में तो और भी लोग थे, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल आदि। सवाल जायज़ है, यह सब भी बहुत महत्वपूर्ण हैं पर गाँधी जी का विशेष स्थान है। गाँधी के देश में ही गाँधी को सबसे कम पढ़ा समझा गया है। आज लोग अपनी मांगों के लिये अनशन पर बैठ जाते हैं उन्हें नहीं पता कि भारत में इसका सर्वप्रथम प्रयोग गाँधी जी के द्वारा किया गया था। उन्होंने इसे भारत के घर–घर तक पहुंचा दिया जिससे आज यह सामान्य सा लगता है। यही गाँधी की विशेषता है कि वे छोटे से नमक के मुद्दे को भी जन आंदोलन का रूप दे देते हैं और सरकार को अपनी मांगें मनवाने को विवश कर देते हैं। अहिंसक आंदोलन चलाकर आजादी की चेतना जन–जन तक पहुँचा देते हैं जिसे हिंसक और गरम दल के लोग नहीं पहुंचा पा रहे थे। अहिंसा का भाव बौद्ध व जैन धर्मों द्वारा २५०० साल पहले से भारत के लोगों में प्रचारित किया गया था। गाँधी जी ने इसे समझा व राजनीति में उतार दिया। यह अभूतपूर्व था। गाँधी जी ने इन तरीकों का अविष्कार नहीं किया था ये तो पहले से मौजूद थे लेकिन उनसे पहले दुनिया के किसी भी व्यक्ति द्वारा अहिंसा का इतना व्यापक प्रयोग नहीं किया गया था। दुनिया के सबसे ताकतवर साम्राज्य को हराने के लिए शायद इसके सिवा कोई अन्य विकल्प भी नहीं था। गाँधी जी के बाद उनके इस तरीके का प्रयोग दुनिया भर में हुआ। नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जैसे नेताओं ने उनसे प्रेरणा ली।

धर्म निरपेक्षता, आज के भारत का एक और बड़ा सवाल है। जब भारत और पाकिस्तान आज़ाद हो कर देश बन रहे थे, एक मुस्लिम राष्ट्र बन रहा था तो दूसरा हिंदू राष्ट्र क्यों नहीं बना। क्योंकि गाँधी जी भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। वे रामराज्य की बात करते थे, ऐसा राम राज्य जिसमें सबके लिए स्थान था, कोई दूसरे धर्म का व्यक्ति इससे डरता नहीं था। गाँधी जी जानते थे कि भारत सभ्यता की शुरुआत से ही अनेक धर्मो का केंद्र रहा है। विविधता के साथ एकता भारत में हमेशा एक ताकत रही है। जब सभी हिंदू थे तब भी शैव और वैष्णव में हिंदू विभाजित थे और छठी शताब्दी ई०पू० में तो ६३ धर्म संप्रदायों का उदय हुआ था। आज दुनिया के सबसे ताकतवर व विकसित देश जैसे अमेरिका, कनाडा व पूरे यूरोप के देश धर्मनिरपेक्ष देश ही हैं। वहीं धर्म के नाम पर बने पाकिस्तान, अफगानिस्तान व सीरिया आदि की हालत कितनी खराब हो रही है देखा जा सकता है। धर्म का भले ही विज्ञान की तरक्की से कुछ लेना–देना न हो लेकिन धर्मान्धता का जरुर है और गाँधी जी का धर्मनिरपेक्षता पर अड़े रहना उचित प्रतीत होता है, भले ही इसकी कीमत उन्होंने अपनी जान देकर चुकाई हो ।

सामाजिक जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं था जिसे गाँधी जी ने छुआ न हो। अगर उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की बात की तो उसके लिए चरखे से सूत कात कर देशी कपड़ों का विकल्प भी दिया और स्वयं इसका प्रयोग करते रहे। आज चीनी सामान के बहिष्कार की बात तो होती है पर उसके विकल्प को सामने प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं। दीवाली पर चीनी लाइटो को लगाने से मना तो करते हैं लेकिन उसका कोई विकल्प उसी कीमत पर उपलब्ध नहीं करा पाते हैं।

अब गाँधी की जरुरत देश को फिर से है। एक साधारण व्यक्ति के लिए ताकत का स्त्रोत हैं वो। कमजोरों के लिए ताकतवरों से लड़ने की प्रेरणा हैं वो। अब इन्तज़ार रहेगा एक ऐसे व्यक्ति का जो दूसरों के लिए अपनी जिंदगी लगा दे और खुद के लिए उसे तन ढकने को पूरे कपड़े भी नहीं चाहिए। अब तो लोग ढोंग करते हैं गाँधी होने का, विंस्टन चर्चिल के शब्दों में अर्ध–नग्न फकीर होने का, लेकिन हो नहीं पाते। तो करते है इंतज़ार एक और गाँधी का।





प्रतीक सिंह
लेखापरीक्षक

तुम्हारे खत मिले, किताबों की सफाई में

तुम्हारे खत मिले, किताबों की सफाई में।
खूब गजल लिखते थे, मेरी जुदाई में।।

धूल में लिपटे हुए, खत को जब साफ किया।
छुपा लिया झट से उसे, जेब की गहराई में।।

टूटे – फूटे ही सही कुछ तो लिखा करते थे।
शेर बन जाते थे कभी , मेरी अंगड़ाई में।।

सारे किरदार लिखावट में तेरी दिखने लगे।
तेरी आहट सी हुई , आज तनहाई में।।

जिन्दगी की रेस में, सब भूल गया था पीर।
आज फिर याद आए तुम, बसंत की पुरवाई में।।



तुम्हें क्या मिला मिटा कर



तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर

मैं खुद ही टूटा–फूटा
तू आकर मुझे तोड़े
यूं छेनियां चला कर
तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर

बरसों लगे थे मुझको
ये घोंसला बनाया
तिनके जुटा जुटा कर
तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर

बच्चों का गुच्छा
हंसता था देख मुझको
भूंखा ही खिलखिलाकर
तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर

अब पूछते हैं मुझसे
मेरा मकां कहां है
मुझे राख को दिखा कर
तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर



जीते हैं कैसे देखो
इंसान मेरे रामा
इंसान को जला कर
तुम्हें क्या मिला मिटा कर
मेरा मकां जला कर

लाल साहेब
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आस



जब उसका न जन्म हुआ था
घर मे मेरे एक युद्ध हुआ था

माँ कहती थे बेटा मेरा
पापा कहते बिटिया मेरी

बेटा बेटी आए साथ
लेकर दोनों जन का प्यार

पापा को बेटी थी प्यारी
माँ को बेटे से था प्यार

पर दोनों थे जान से प्यारे
दोनों दोनों के थे दुलारे

उंगली पकड़ कर चलना सिखलाया
बातों को कहना सिखलाया

माँ बाप ने देखे सपने
दोनों बड़े हुये जब अपने

बेटी थी जो जान से प्यारी
सूनी कर गए बगिया सारी

उसी दिन वो रोया था
जाने क्या वो खोया था

पूरा हुआ फिर से परिवार
बहू आ गयी उसके द्वार

अब तो जवानी के दिन बीते
हो गए थे अब पोती पोते

चलना फिरना घर से द्वार
सिमट गया घर मे संसार

बेटा भी ना देता ध्यान
जिस पर था हर पल कुर्बान

मेरी बोली , रास न आती
जिसकी बिना कहे समझ थी जाती

जब उसको नीद न आती
लोरी उसको मैं थी सुनती

अब मुझको नीद न आए
लोरी मुझको कौन सुनाये

उंगली पकड़ कर उसे चलती
गिरता वो तो दौड़ उड़ती

मैं गिरती हूँ कौन उड़ाए
मेरा पाना काम न आए

कैसे सपने बोये हमने
कैसे हमने काटे हैं

मैं जानूं मेरे दिल जाने
और खुदा तू जाने हैं

कैसा बदल गया संसार
किसी पर नही रहा एतबार

भगवान से बिनती मेरी
कर इसकी हर इच्छा पूरी

खतम हुआ सफर अब मेरा
मैं तो चली होने को है सबेरा

लाल साहेब
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बेटी : हमको भी इंसान बनाओ



हमें पढ़ाओ हमें लिखाओ, हमको भी इंसान बनाओ
बेटी हैं तो क्या हुआ, हम पर थोड़ा विश्वास दिखाओ
हम छू सकते हैं आसमान को, हमको थोड़ा हाथ बढाओ
हमें पढ़ाओ हमें लिखाओ , हमको भी इंसान बनाओ



आऊँगी तेरे घर में अगर , भर दूँगी दुनिया रंगों से
माँगूंगी कुछ भी नहीं, प्यार के सिवा तुमसे
गर्व से मेरा नाम लोगे, नाज करेगी दुनिया तुम पर
सर उठा दूँगी तेरा, विश्वास तो कर थोड़ा हम पर



बेटे से कम हम भी नहीं, नहीं समझते क्यों ये बात
मार कर मुझको गर्भ में ही, छुड़ा देते हो अपनों का साथ
आने दो दुनिया में मुझे , दूँगी हर कदम पर तेरा साथ
कांधे पर तेरा हाथ रख कर, सदा चलूँगी तेरे साथ



चली जाऊँगी घर से जब , याद आएगी मेरी कहानी
ढूँढोगे हर घर में मुझे, नहीं मिलेगी बिटिया सयानी
भर जाएंगे आँख मे आँसू, नाम से मांगोगे जब पानी
बिटिया होती काम तो करती, सोचोगे तुम यही कहानी

बेटों को कुछ सिखलाओ
उनको अच्छी राह दिखाओ
हवस के लिए, न मुझे जलाओ
हमें पढ़ाओ हमें लिखाओ, हमको भी इंसान बनाओ

लाल साहेब
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



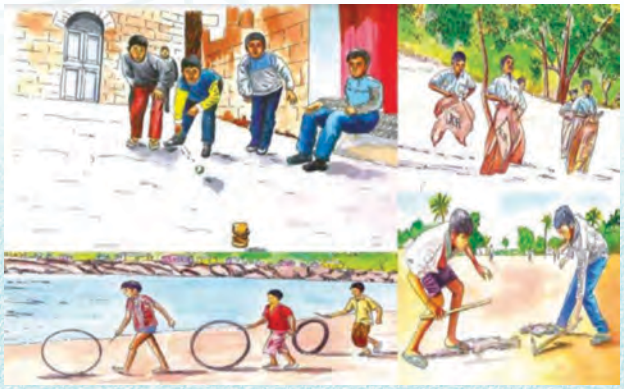
वो बचपन की यादें

साथियों, मैं इस लेख में हमारे बचपन से जुड़ी उन तमाम मधुर यादों, उन खुशी के क्षणों, उन शैतानी भरी शरारतों का वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ जिसे पढ़ने के बाद एक बार फिर हमारे बचपन की यादें ताजा हो जाएंगी ! हर किसी को अपना बचपन याद आता है ! हम सबने अपने बचपन को जिया है ! इस संसार में शायद ही ऐसा कोई इंसान होगा जिसे अपना बचपन याद नहीं आता हो ! यदि आज हमसे कोई यह पूछे कि अगर आपकी कोई एक इच्छा पूरी की जा सकती है तो वो इच्छा क्या होगी तो हममें से ज्यादातर लोगों का यही जवाब होगा कि हम फिर से अपने बचपन में जाना चाहेंगे क्योंकि हमारा बचपन हमारे जीवन के अनमोल समय से जुड़ी यादों का अनोखा संसार है !

बचपन की मधुर यादों में माता–पिता का प्यार, भाई–बहन के लड़ाई–झगड़े, यार दोस्तों के साथ बिताये समय, स्कूल के दिनों की यादें इत्यादि प्रमुख हैं ! यार दोस्तों के साथ योजना बनाकर आम के पेड़ पर चढ़कर चोरी से आम तोड़कर खाना, खेतों से गन्ने तोड़कर चूसना और खेत के मालिक के आने पर नौ दो ग्यारह हो जाना हर किसी को याद है ! पहले चोरी करना और बाद में पकड़े जाने पर साफ झूठ बोलना बचपन की यादों में शुमार है ! बगीचों में दोस्तों के साथ खेलना, हाथ पैर में मिट्टी लगना, चोट लगने या जख्म होने पर माँ की डाँट–फटकार तथा माँ का प्यार भरा स्पर्श किसे याद नहीं है ! इन शैतानी भरी यादों का भंडार है हमारा बचपन ! जब हम खेलते–खेलते या पढ़ते–पढ़ते कहीं भी सो जाते थे लेकिन सुबह जब नींद खुलती थी तो खुद को अपने बिस्तर पर पाते थे उस समय हमें बहुत आश्चर्य होता था कि हम तो छत पर सोये थे, बिस्तर पर कैसे आ गए ? आज हमें समझ आता है कि वो माँ का प्यार था जो सोने से पहले हमें बिस्तर पर सुलाती थी फिर खुद सोती थी ! हम सब अपने बचपन में शरारत करके, शोरगुल करके अपने परिवार के सदस्यों को परेशान किया करते थे जिसके बदले हमें डाँट सुननी पड़ती थी एवं कभी–कभी मार भी पड़ती थी फिर भी हमारी शरारतें कम नहीं हुई और न ही हमारे लिए उनका प्यार कम हुआ करता था !



हममें से अधिकतर साथियों का बचपन गिल्ली डंडा, लुका छिपी , कबड्डी, फुटबाल, तथा क्रिकेट खेलते एवं पतंग उड़ाते बीता होगा ! इन खेलों में जो मानसिक एवं शारीरिक आनंद आता था वो आज के डिजिटल गेम में कहाँ ! इन खेलों को खेलने के बाद हमें अलग से कोई व्यायाम या योग करने की जरुरत नहीं होती थी ! आज के समय के बच्चों का बचपन कंप्यूटर व मोबाइल गेम खेलने में बीत रहा है जो अनेक बीमारियों का कारण भी बनता जा रहा है ! हमनें तो दादा–दादी के आँखों में चश्में लगे देखे हैं मगर आज के ज्यादातर बच्चों को तो बचपन में ही चश्में लग जाते है ! जो आनंद पहले के खेलों में आता था उसकी अब के डिजिटल गेम में कल्पना



भी नहीं की जा सकती है ! ये देशी खेल अब आजकल के बच्चों के मनोरंजन से काफी दूर होते जा रहे हैं क्योंकि वीडियो गेम, टीवी, कंप्यूटर गेम, मोबाइल गेम इत्यादि ने इन खेलों की जगह ले ली है ! आजकल के बच्चों को डिजिटल गेम ज्यादा पसंद है और ये सारी सुविधाएँ आज हमारे घर के अंदर ही उपलब्ध हैं ! खुले मैदान में खेलने से जो शारीरिक एवं मानसिक विकास होता था वो अब नदारद सा होता जा रहा है ! हममें से अधिकतर अपने बचपन में पापा द्वारा साइकिल पर घुमाया जाना कभी नहीं भूल सकते ! जब भी पापा कहीं जाने के लिए साइकिल निकालते तब हम भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते, पापा भी हमें प्यार से साइकिल पर घुमा देते थे ! जब हम थोड़ा और घुमाने का जिद करते तो वो प्यार से कहते, बेटा अभी मुझे देर हो रही है, शाम को आऊंगा तो घुमा दूंगा ! और हम शाम होने का इंतजार किया करते थे ! आज कार और मोटरसाइकिल के जमाने में वो साइकिल वाली यादों का अहसास अब कहाँ ?

पहले बचपन में हमारी पढ़ाई लिखाई स्लेट पट्टी पर हुआ करती थी जिस पर हम लिखकर याद करते थे और फिर मिटा देते थे ! एक बार गलती होने पर मिटाकर एवं सुधार कर फिर से पढ़ना लिखना सीखते थे तथा कुछ बच्चे तो कई बार अपने माता पिता को भी पढ़ा दिया करते थे ! हमारे बचपन में पढाई का पाठ्यक्रम बहुत कम हुआ करता था जिसकी वजह से कम समय में ही अपना गृह कार्य पूरा करके दोस्तों के साथ खेलने चले जाते थे ! आजकल के बच्चों को केजी–वन से ही कॉपी पर पढ़ना लिखना सिखाया जाता है ! पहले कुछ ही विषयों की पढाई करनी पड़ती थी जिससे गृह कार्य भी कम हुआ करता था ! आजकल के बच्चों को शुरु से ही कई विषयों की पढ़ाई करनी पड़ती है जिससे इनका गृह कार्य भी बहुत ज्यादा हो जाता है ! यही कारण है, कि आजकल के बच्चों पर पढ़ाई–लिखाई का काफी तनाव दिखाई देता है !

बचपन में दादा–दादी एवं नाना–नानी काफी किस्से कहानियां सुनाया करते थे जिनमें ज्यादातर रामायण, महाभारत तथा अन्य राजा महाराजाओं तथा महापुरुषों की कहानियां हुआ करती थीं जिन्हे सुनकर बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण होता था ! उनकी कहानियां मनोरंजन के साथ–साथ सीख भी देती थीं! आजकल यह दुर्लभ होता जा रहा है क्योंकि वर्तमान में न तो बच्चों को इसकी जरुरत है और न ही दादा–दादी, नाना–नानी इसमें रुचि रखते हैं ! इन कहानियों की जगह मोबाइल फोन व टीवी ने ले ली है ! गाँव में बिजली कम आने के कारण गर्मियों में सब लोग छत पर ही सोते थे और प्राकृतिक हवा का आनंद लेते थे ! अब ए.सी. एवं कूलर में वो प्राकृतिक हवा का आनंद कहाँ? पहले के बचपन की तुलना में अब का बचपन काफी अलग हो गया है फिर भी बचपन तो बचपन ही होता है ! यादें तो जुड़ी ही होती हैं ! हमें उम्मीद है यह लेख पढ़कर आपके बचपन की यादें भी ताजा हो गई होंगी !

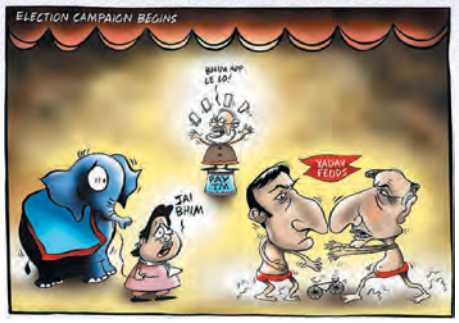
राजेश कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापाल








राजनीति का सर्कस



पहले मनोरंजन का
सजीव साधन
एक था बस
जिसे सब कहते थे सर्कस
जो आज एक शहर
तो कल दूसरे शहर में होते थे,
मनों और टनों वजन
उनके वाहनों में होते थे
हाथी, गैंडे, शेर ,चीते
जैसे जानवर
पिंजरों में बंद होते थे
पर जानवरों पर रोक लगने के बाद
सर्कस की रंगत ही खो गई
फिर आई राजनीति
वह मनोरंजन का साधन बन गई
और सरकारी सर्कस हो गई
वही खेल तमाशे
वही ढोल ताशे
कभी जोकर पोथी बांचे
कोई नचाए कोई नाचे
गधे खाएं गुलाब जामुन
तो घोड़े को घास चरनी पड़ती है
रिंगमास्टर हो जाए फेल
तो बाड़ाबंदी
करनी पड़ती है।





प्रमिला बाघ
लेखापरीक्षक



गलतफहमी

गलतफ़हमी क्या है ? क्या है ये गलतफ़हमी ?

दो दिलों को मिलने से रोकती ये गलतफ़हमी

दो दोस्तों में फूट डालती ये गलतफ़हमी

टूटे हुए रिश्तों में और दूरियाँ बढ़ाती ये गलतफ़हमी

भाई बहन के प्यार को भी न समझती ये गलतफ़हमी



सपनों की हर दीवार गिराती ये गलतफ़हमी

रिश्तों के हर धागे को तोड़ती ये गलतफ़हमी

शर्म हया सब बरबाद करती ये गलतफ़हमी

दुनिया के दस्तूर से अलग अपना दस्तूर बनाती ये गलतफ़हमी

किसी भी धर्म को न मानती अपना नया धर्म बनाती ये गलतफ़हमी

छोटे से कमरे में भी अकेलेपन का एहसास कराती ये गलतफ़हमी

प्यार से लिखे हर ख़त को जलाती ये गलतफ़हमी

अरे ख़त क्या चीज है, दिलों को रुलाती ये गलतफ़हमी

वर्षों की मेहनत को पानी में डुबाती ये गलतफ़हमी

महल को भी जला के राख बनाती ये गलतफ़हमी

चूल्हे को ना जलने देती ये गलतफ़हमी

क्या बताऊं यारो, मुझे ये कविता लिखने को मजबूर बनाती ये गलतफ़हमी।



अरुण कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

अखबार



इक बार
जिंदगी की रेल में

रेल की बर्थ के बीच, फर्श पर
हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू अखबारों का बिस्तर लगाया
और सोने की कोशिश की ही थी
कि सारी खबरें मुझे घेर कर
सुनाने लगी दास्तां अपनी-अपनी
किस तरह की ज्यादती की जाती है उनके साथ

मैली-कुचैली सी एक खबर बोली
देखो किस तरह से मुझे तोड़ कर
मुझे ही गुनहगार साबित किया
लगता है कि खबर लिखने वाला
किसी ताकतवर हाथ की कठपुतली बन गया है

तभी एक अंग्रेज़ी खबर की आहट सी हुई
ऐसा लगा किसी ने उसके गले पे पैर रखकर
दबा दिया हो गला ही उसका
ज़ुबां और आँखें बाहर तक निकल आयी थीं

तभी एक और खबर ने खराश ली
शायद उसको सही उच्चारण करना जरूरी होगा
और बोली कि मेरी तो व्यथा ही अलग है
मुझे एक कौमी अखबार की खबर की शक्ल मिल गई है
तभी एक स्वीपर ने
झाड़ू के डंडे से मुझे उठाया
बोला कि स्टेशन आ गया महाराज
जैसे ही मैं, अपने जूते की ओर झुका
उसने सारे अखबारों को झाड़ू से इकट्ठा किया
और डस्टबिन में डाल कर
जाते हुए, मुझसे कह गया

ये कूड़ा है
बाहर फेंकोगे तो जुर्माना लगेगा ।



लाल साहेब
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





एक नजर भारत-चीन विवाद पर



ऐसे समय में जब विश्व को वैश्विक महामारी से निपटने के लिये आपसी सहयोग, समन्वय एवं सहभागिता की आवश्यकता है, विश्व के दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन सीमा विवाद के कारण आपस में उलझे हुए हैं। हालिया विवाद का केंद्र **अक्साई चिन** में स्थित **गलवान घाटी** है, जिसको लेकर दोनो देशों की सेनाएँ आमने–सामने आ गईं। जहाँ भारत का आरोप है कि गलवान घाटी के किनारे चीनी सेना अवैध रूप से टेंट लगाकर सैनिकों की संख्या में वृद्धि कर रही है, तो वहीं दूसरी ओर चीन का आरोप है कि भारत गलवान घाटी के पास रक्षा संबंधी अवैध निर्माण कर रहा है। इस घटना से पूर्व उत्तरी सिक्किम के नाथू–ला सेक्टर में भी भारतीय व चीनी सैनिकों की झड़प हुई थी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा 'G–7 प्लस' समूह में भारत को आमंत्रित करना उसके बढ़ते रणनीतिक कद को दर्शाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति का यह निर्णय ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और चीन के संबंधों में विभिन्न मुद्दों पर तनाव बना हुआ है, जिसमें हॉन्गकॉन्ग की स्वायत्तता, ताइवान से तनाव, COVID–19 की उत्पत्ति, दक्षिण चीन सागर में तनाव और व्यापार जैसे विभिन्न पहलू शामिल हैं।

इतिहास

- हजारों वर्षों तक तिब्बत ने एक ऐसे क्षेत्र के रूप में काम किया जिसने भारत और चीन को भौगोलिक रूप से अलग और शांत रखा, परंतु जब वर्ष 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर वहाँ कब्जा कर लिया तब भारत और चीन आपस में सीमा साझा करने लगे और पड़ोसी देश बन गए।
- वर्ष 1954 में नेहरू और झोउ एनलाई (Zhou Enlai) ने **"हिंदी–चीनी भाई–भाई"** के नारे के साथ **पंचशील सिद्धांत** पर हस्ताक्षर किये, ताकि क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिये कार्ययोजना तैयार की जा सके।
- वर्ष 1959 में तिब्बती लोगों के आध्यात्मिक और लौकिक प्रमुख दलाई लामा तथा उनके साथ अन्य कई तिब्बती शरणार्थी हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में बस गए। इसके पश्चात् चीन ने भारत पर तिब्बत और पूरे हिमालयी क्षेत्र में विस्तारवाद और साम्राज्यवाद के प्रसार का आरोप लगा दिया।
- वर्ष 1962 में सीमा संघर्ष से द्विपक्षीय संबंधों को गंभीर झटका लगा तथा उसके बाद वर्ष 1976 मे भारत–चीन राजनयिक संबंधों को फिर से बहाल किया गया। इसके बाद समय के साथ–साथ द्विपक्षीय संबंधों में धीरे–धीरे सुधार देखने को मिला।
- वर्ष 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने द्विपक्षीय संबंधों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया शुरू करते हुए चीन का दौरा किया।
- वर्ष 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने भारत–चीन संबंधों में सिद्धांतों और व्यापक सहयोग पर घोषणा पर हस्ताक्षर किये।
- वर्ष 2011 को **चीन–भारत विनिमय वर्ष** तथा वर्ष 2012 को **चीन–भारत मैत्री एवं सहयोग वर्ष** के रूप में मनाया गया।
- वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन का दौरा किया इसके बाद चीन ने भारतीय आधिकारिक तीर्थयात्रियों के लिये नाथू ला दर्रा खोलने का फैसला किया। भारत ने चीन में भारत पर्यटन वर्ष मनाया।
- वर्ष 2018 में चीन के राष्ट्रपति तथा भारतीय प्रधानमंत्री के बीच वुहान में 'भारत–चीन अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' का आयोजन किया गया। उनके बीच गहन विचार–विमर्श हुआ और वैश्विक और द्विपक्षीय रणनीतिक मुद्दों के साथ–साथ घरेलू एवं विदेशी नीतियों के लिये उनके संबंधित दृष्टिकोणों पर व्यापक सहमति बनी।
- वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति बीच चेन्नई में 'दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' आयोजित किया गया। इस बैठक में, 'प्रथम अनौपचारिक सम्मेलन' में बनी आम सहमति को और अधिक दृढ़ किया गया।
- वर्ष 2020 में भारत और चीन के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की **70 वीं वर्षगांठ** है तथा 'भारत–चीन सांस्कृतिक तथा पीपल–टू–पीपल संपर्क' का वर्ष भी है।
- हाल ही में भारत – चीन सीमा विवाद के दौरान भारतीय खुफिया एजेंसियों के सूत्रों से यह पता चलने पर कि चीन की कुछ प्रमुख ऐप्स भारत में साइबर अपराध को बढ़ावा दे रहीं हैं, भारत सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर चीन के 59 ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जिनमें हेलो, टिकटोक , कैम स्कैनर जैसे प्रसिद्ध ऐप्स भी शामिल हैं।

आर्थिक संबंध

21 वीं सदी के प्रारंभ से अब तक भारत और चीन के बीच होने वाला व्यापार 3 बिलियन डॉलर से बढ़कर लगभग 100 बिलियन डॉलर (32 गुना) हो गया है। वर्ष 2019 में भारत तथा चीन के बीच होने वाले व्यापार की मात्रा 92.68 बिलियन डॉलर थी।

विज्ञान एवं औद्योगिकी

भारतीय कंपनियों ने चीन में तीन सूचना प्रौद्योगिकी कॉरिडोर स्थापित किये हैं, जो सूचना प्रौद्योगिकी तथा उच्च प्रौद्योगिकी में भारत–चीन सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

रक्षा संबंध

भारत तथा चीन के बीच हैंड–इन–हैंड संयुक्त आतंकवाद–रोधी अभ्यास के अब तक 8 दौर आयोजित किये जा चुके हैं।

पीपल–टू–पीपल कनेक्ट

दोनों देशों ने कला, प्रकाशन, मीडिया, फिल्म और टेलीविजन, संग्रहालय, खेल, युवा, पर्यटन, स्थानीयता, पारंपरिक चिकित्सा, योग, शिक्षा तथा प्रबुद्ध मण्डल (थिंक टैंक) के क्षेत्र में आदान–प्रदान तथा सहयोग पर बहुत अधिक प्रगति की है।

विवाद के बिंदु

- सीमा विवाद, जैसे – पैंगोंग त्सो मोरीरी झील का विवाद–2019, डोकलाम गतिरोध–2017, अरुणाचल प्रदेश में आसफिला क्षेत्र पर विवाद।
- परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह (NSG) में भारत का प्रवेश, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में भारत की स्थायी सदस्यता आदि पर चीन का प्रतिकूल रुख।
- वन बेल्ट वन रोड (ओबोर) पहल संबंधी विवाद, जैसे चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर(CPEC) विवाद।
- सीमा पार आतंकवाद के मुद्दे पर चीन द्वारा पाकिस्तान का बचाव एवं समर्थन।
- चीन ने हिंद–प्रशांत महसागरीय क्षेत्र में भारत (QUAD सदस्य) की भूमिका पर भी असंतोष जाहिर किया है।
- G–7 समूह के विस्तारीकरण और उसमें भारत की सदस्यता के कारण भी चीन नाखुश नजर आ रहा है।

अन्य पहलू

शिनजियांग प्रांत में रहने वाले उइगर मुस्लिम **'ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट'** चला रहे हैं जिसका उद्देश्य चीन से अलग होना है। चीन द्वारा लगातार अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की कश्मीर नीति का विरोध करने के परिणामस्वरूप भारत ने अपनी नीति में परिवर्तन करते हुए चीन की 'मुस्लिम अल्पसंख्यक नीति' की आलोचना की है।

विवाद समाधान की रणनीति

- दोनों देशों को नेताओं के रणनीतिक मार्गदर्शन का पालन करना चाहिये।
- मैत्रीपूर्ण सहयोग की सामान्य प्रवृत्ति को विकसित करने पर बल देना होगा।
- पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग की गति का विस्तार करना चाहिये।
- भारत व चीन को अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मामलों पर समन्वय को बढ़ाना चाहिये।
- आतंकवाद की शरणस्थली पाकिस्तान को चीन द्वारा सहयोग न मिले।
- सीमाओं को परिभाषित करने के साथ ही उनका सीमांकन और परिसीमन किये जाने की आवश्यकता है ताकि आस–पास के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के भय को दूर किया जा सके और संबंधों को मजबूत किया जा सके।
- भारत को चीन के पड़ोसी देशों के साथ कूटनीतिक अंतराष्ट्रीय संबंध तीव्र कर देना चाहिए जिससे चीन के ऊपर अंतराष्ट्रीय दबाव बनाया जा सके।
- भारत, अमेरिकी समर्थन के माध्यम से अपने हितों को ध्यान में रखते हुए चीन को विभिन्न विवादित मुद्दों पर वार्ता करने के लिये तैयार कर सकता है और चीन को अपनी साम्राज्यवादी नीतियों पर लगाम लगाने के लिये विवश किया जा सकता है। वैसे भी चीन द्वारा पूर्व में वैश्विक महामारी के संबंध में जानकारियों को छिपाने तथा अब अपने पड़ोसी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण करने के कारण विश्व बिरादरी के सम्मुख अलग–थलग हो गया है।



प्रेम प्रकाश यादव
डी. ई. ओ.

तेरा भी सम्मान होगा



भाई का सहारा, पिता का अभिमान होगा,
बहन का साहस, माँ का स्वाभिमान होगा !
अथक निरंतर प्रयत्नों से हर मुश्किल आसान होगा,
कर मेहनत एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!

हकीकत करने हैं वो ख्वाब आँखों में जो सजाये हैं,
जिन्हें पाने की चाहत में न जाने कितने लम्हे बिताये हैं !
बहुत हुआ अपमान, हासिल अब मुकाम होगा,
कर मेहनत एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!



रख हौसला वो मंजर भी आएगा,
जग सारा तेरे पीछे–पीछे आएगा !
अपने श्रेष्ठ कर्मों से तू पुरुष महान होगा,
कर मेहनत एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!

वो दिन आएगा जब तू देश की शान होगा,
दुनिया में तेरा एक अलग ही पहचान होगा !
आलोचकों में भी तब तेरा गुणगान होगा,
कर मेहनत एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!

सफलता के शिखर पर जब तू विराजमान होगा,
तेरी जमीं, तेरा ही आसमान होगा !
तेरे ही कदमों में ये सारा जहान होगा,
कर मेहनत एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!



राजेश कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापाल



विचारों का तूफान

विचारों का तूफान जब आये
शब्दों की कोई बाढ़ सी आये
उन अनगिनत तरंगों को लिख
जब शब्द काग़ज़ पर उतर आये,
इसी भाव का नाम कविता है!!



समुंदर में जैसे सीप को ढूंढते
डुबकी लगा मोती को चुनते
कई बार विफल होते हैं जब
तब जाकर जब सफलता आये
इसी सफलता का भाव कविता है!!

दिन–दिवस की बात नहीं हो
कोई दिवस में सिमटी बात नहीं हो
जज़्बात मे लिपटी भाव–भंगिमा
जैसे प्रिय की हो जान चंद्रमा
इसी समर्पण का नाम कविता है!!

ज़िंदगी

कुछ दबी हुई ख्वाहिशें
कुछ मंद मुस्कुराहटें
कुछ खोये हुये सपने
कुछ अनसुनी आहटें
कुछ दर्द भरे लम्हे
कुछ सुकून भरे लम्हात
कुछ मद्धम सी बरसात
कुछ अनकहं अल्फाज़
कुछ नासमझ इशारे
कुछ उलझनें हैं राहों में
कुछ कोशिशें बेहिसाब
यही तो ज़िदंगी है जनाब
बस..यही तो जिदंगी है जनाब!

कारीगर हूँ कलम का



कारीगर हूँ कलम का
शब्दों से विचारों को तराशता हूँ !
या फिर ऐसा चित्रकार हूँ
कागज के कैनवास पर
स्याही से कल्पनाओं में रंग भरता हूँ !
ख़ामोश ज़बान को आवाज़ देता हूँ
भटकते समाज को दिशा देता हूँ
कारीगर हूँ कलम का
मैं पत्थर से निस्पंद देहों को
स्पन्दन देता हूँ !!





कु. निशा ध्रुव
एम.टी.एस.



आजकल ईटें और दीवारें भी करने लगी हैं बातें

मैंने कोरोना के दौर में दीवारों को दीवारों से और उसके अंदर के ईटों को ईटों से बातें करते देखा। ईंटे अपनी अब तक के सफर की कहानी एक दूजे को सुना रहे थे। किस जमीन से उसे खोदकर पानी में रौंदा गया, फिर किस मालिक के ईंट की भट्टी में आग में तपा कर उसे मिट्टी से ईंट में तब्दील किया गया था। ईटों को बनाने वाले ठेकेदारों ने किन मेहनतकश मजदूरों को मुनासिब रोजी की रकम नहीं दी थी। उस पर वह दिल ही दिल में रोया था, उन्हें यह सब याद है। ईंट भट्टे के मालिक ने गैरकानूनी रूप से बनाने के लिए किन सरकारी मुलाजिमों को कितनी रिश्वत दी थी उन्हें यह भी याद था। जिस इंसान ने किसी रोज हम ईटों को सीधे आड़े जोड़कर दीवारें तामीर की थीं, उस पर रेत और सीमेंट की प्लास्टर चढ़ाई थी, और फिर उस पर रंग रोगन भी किया था। आज कोरोना के दौर में वह इंसान इन चार दीवारों में भी खौफजदा नजर आ रहा है । आज उस इंसान के घर न कोई मेहमान आता है ना किसी को दावत पर बुलाया जाता है। बस अकेला गुमसुम डरा सहमा सा इन चार दीवारी के अंदर खुद को कैद कर रखा है। उसे पल पल सैनिटाइजर की जरूरत पड़ रही है और मुंह पर मास्क लगाए जुबा तो वही बोल रहा था पर सुनाई कुछ और दे रहा था। पर हम तो ठहरे ईंट जो आग से तप कर निकले हैं। हमारा इम्यून सिस्टम बहुत मजबूत है, ना हमें सैनिटाइजर की जरूरत है और ना ही मास्क की। क्योंकि हमारे दोनों ओर तों प्लास्टर चढ़ी है उसके ऊपर डिस्टेंपर। तो हमें किस बात की फिक्र। आज इंसान हम ईटों से बनी चारदीवारी में भी महफूज नहीं है । बाहर जाने को डर रहा है । पहले बड़ी शान से घर के बाहर खड़े होकर हमसे बने मकान की ओर इशारा कर लोगों से कहता था कि यह मेरा आशियाना है। आज उसे क्या हो गया है कि उसने खुद ही अपने को अपने ही आशियाने में कैद कर लिया है। इतना खौफ क्यों है आज इस कोरोना नाम के किसी वायरस से। कभी वह बेरहमी से मकान के दीवार पर कील ठोकता था सुंदर से किसी शानदार दृश्य की तस्वीर टांगने के लिए। तब उसे हम ईटों पर हो रही दर्द का एहसास नहीं होता था। पर आज वह ऐसी दर्द के दौर से गुजर रहा है उसे देख हमने अपना दर्द भुला दिया। आज वही ईटे इंसानों पर मुस्कुरा ही नही रहे थे बल्कि ठहाके लगा रहे थे। ईंटे आज कह रहे थे हम ही से बनी दीवारों के बीच में ही इंसान की तिजोरी रखी हुई है। जिसमें पैसे, गहने, कपड़े सब भरे पड़े हैं। पर ना जाने क्यों आज सब कुछ उसके लिए बेमानी सा हो गया है। कभी वह उन्हें उलट–पुलट कर देखता था फिर कुछ पसंद कर पहनता था और किसी महफिल में शरीक होने चला जाता था। लजीज खाना खाकर आता था, फिर हम लोगों को सुनाता था। और अब हाल यह है की इन चीजों की ओर देखता तक नहीं है। ना उसे छूता है। कभी कभार थोड़े बहुत पैसे, जो कभी उसे एक पल में ही उड़ा दिया करता था, आज वही रकम उसके महीने भर का हिसाब के लिए काफी हो जाता है, क्योंकि आज उसके जितने भी ऐशगाह, रंग–बिरंगे लिबासों को नुमाइश करने के खातिर जितने भी बाजार थे सब बंद पड़े हैं । आज उसको यह एहसास हुआ है किअसल में जिंदगी जीने के लिए जरूरतें इतनी कम है जिसकी उसने कभी उम्मीद भी नहीं की थी। इंसान को आज तक काले कारनामे करने में भी इतना खौफ नहीं हुआ था, जो आज एक अदने से कोरोना वायरस से हुआ है। उसे तो अपने जिंदगी के कितने पल बचे हैं, उसी का खतरा सता रहा था, कि कहीं कोरोना उस पर भी ना सवार हो जाए और वह भी रोज अखबार में आ रहे आंकड़ों में शामिल ना हो जाए।

शुभंकर राय चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



किस्सा ऐडम्स एप्पल का

जमाना कहता है कि गरीबी में ही डगमगाता है ईमान।
पर हमने तो अमीरी में भी, सही भाव तय होने पर, ईमान को
होते देखा है नीलाम।
वैसे उस इन्सान पर न कर तू कभी एतबार।
जिसको खुदा पर भी नहीं है एतमाद।
याद कर तू किस्सा ऐडम्स एप्पल का,
जिसने खुदा की नसीहत को भी महज एप्पलकशी के शौक के
खातिर किया था नजरअंदाज।
शुक्र कर कि गरीबी में एप्पल खरीदने की
ऐसी हैसियत है ही कहाँ तेरी, जिसके खातिर डगमगाए ईमान।
पर अमीरी तो एप्पल खरीदने की हैसियत और खाने का
शौक अब भी रखता है जनाब।
आखिर कहानी का लब्ब-ओ-लुआब यह है कि
इंसान है तो पाक,
पर एप्पल की तासीर ही ऐसी है कि
इंसान के ईमान को कर देता है नापाक।
खामखा सरकार, नेक दिल इंसान जैसे
मेहुल चोकसी, नीरव मोदी, विजय माल्या के पीछे पड़ी है।
और बाजार में एप्पल को खुले आम बिकने की इजाजत दे रखी है।
वैसे एक सलाह हमारी भी सुन लीजिए।
अभी से अपने बच्चों को एप्पल खाने से रोकिए।
वरना बुढ़ापे में उनसे सहारा मिलने की उम्मीद न कीजिए।
और बुढ़ापे का पता अभी से ओल्ड एज होम रख लीजिए।
तब आपको हमारी याद जरूर आएगी कि
राय चौधरी बस्तरिया कर कोई लफ्फाज पंडित था।
आंकड़ों की बाजीगरी तो उसका पेशा था
पर लफ्जों की जादूगरी में भी महारत रखता था।
बिन बकवास के सीधी बात करता था।
क्योंकि वह स्प्राइट पीता था।

शुभंकर राय चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

किसान



निज कर से करते कृषि कार्य,
वो कृषक तभी कहलाते हैं।
अपने अतीत को दे बिसार,
नित नव कोपलें सजाते हैं।
'हर घडी हर पहर में,
लू व शीतल लहर में,
रुकता नही वो कर्मवीर,
किसी भी प्रकृति के कहर में।
डाल भाग्य का दाना भू पर,
कुछ उससे आश संजोता है।
फिर रखता है उम्मीद उसी से,
जो हंशी-खुशी से बोता है।
'फिर भी उस गरीब किसान को,
लगती किसी की हाय है।
हो जाती बरसात बे-मौसम,
नही होता कोई सहाय है।
सूबे की सरकार तुरंत फिर,
राहत देकर बनती समझदार है।
सौ-दो सौ की नकदी देकर,
उसकी चाहत लेती है।
नित उस पर भी बैंकर्स के,
बंधे कमीशन अपार हैं।
मिलते हैं छः सौ रुपये,
गर आये जो हजार हैं
अब क्या करे किसान वह,
बन्द न्याय के दरबार हैं।
फिर भी आशा रखे है किसान,
क्योकि अब तो डिजिटल सरकार है।



अरुण कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा अधिकारी से वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत हुए अधिकारियों का विवरण ।

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	पी. के. बसाक	सी.जी.आर.पी.ए 2250043	20 / 11 / 2019
2	मैथयूस के. ईपन	सी.जी.आर.पी.ए 3250420	20 / 11 / 2019
3	शिशिर कुमार मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए 3250425	20 / 11 / 2019
4	सुनील अमर भालाधरे	सी.जी.आर.पी.ए 3250421	20 / 11 / 2019
5	जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	सी.जी.आर.पी.ए 3250422	20 / 11 / 2019
6	विमलेश	सी.जी.आर.पी.ए 3250423	20 / 11 / 2019
7	सुधीर कुमार वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250424	20 / 11 / 2019
8	कमलेश	सी.जी.आर.पी.ए 3250426	20 / 11 / 2019
9	सुशांत सेठिया	सी.जी.आर.पी.ए 3250039	20 / 11 / 2019
10	अनिल कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250043	20 / 11 / 2019
11	गौरव शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए 3250029	20 / 11 / 2019
12	अलोइस कुजूर	सी.जी.आर.पी.ए 3250044	20 / 11 / 2019
13	विशाल शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए 3250030	20 / 11 / 2019
14	विजय केसवानी	सी.जी.आर.पी.ए 3250033	20 / 11 / 2019
15	सत्या शील	सी.जी.आर.पी.ए 3250034	20 / 11 / 2019
16	मनीष कुमार मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए 3250035	20 / 11 / 2019
17	गौरव भारद्वाज	सी.जी.आर.पी.ए 3250045	20 / 11 / 2019
18	अनमोल आदर्श बाकरे	सी.जी.आर.पी.ए 3250036	20 / 11 / 2019
19	गौतम कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250046	20 / 11 / 2019
20	ओमप्रकाश देवांगन	सी.जी.आर.पी.ए 3250038	20 / 11 / 2019
21	निशांत कुमार यदवेश	सी.जी.आर.पी.ए 3250049	20 / 11 / 2019
22	नीलिमा मेहेर	सी.जी.आर.पी.ए 3250041	20 / 11 / 2019
23	सुरजीत सिंह	सी.जी.आर.पी.ए 3250042	20 / 11 / 2019
24	साजन थॉमस	सी.जी.आर.पी.ए 3250081	20 / 11 / 2019
25	बिभूति भूषण मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए 3250080	20 / 11 / 2019
26	शीना वी पिल्लई	सी.जी.आर.पी.ए 3250083	20 / 11 / 2019
27	प्रीति शर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250086	20 / 11 / 2019
28	एम वी अनंत सांईराम	सी.जी.आर.पी.ए 3250104	20 / 11 / 2019
29	कृष्ण राम वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250441	20 / 11 / 2019
30	रबीन्द्र कुमार बिस्वाल	सी.जी.आर.पी.ए 3250433	20 / 11 / 2019
31	प्रबोध कुमार श्रीवास्तव	सी.जी.आर.पी.ए 3250434	20 / 11 / 2019
32	गोपीनाथ पाणिग्रही	सी.जी.आर.पी.ए 3250440	20 / 11 / 2019

लेखापरीक्षा अधिकारी से वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत हुए अधिकारियों का विवरण ।

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
33	कविता विनय	सी.जी.आर.पी.ए 3250435	20 / 11 / 2019
34	लेखा उदयन	सी.जी.आर.पी.ए 3250436	20 / 11 / 2019
35	मोह. साबिर अली	सी.जी.आर.पी.ए 3250437	20 / 11 / 2019
36	राजेश कुमार सिंह	सी.जी.आर.पी.ए 3250438	20 / 11 / 2019
37	चन्द्रकान्त वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250439	20 / 11 / 2019
38	हरिकेश वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250026	20 / 11 / 2019
39	पंकज द्विवेदी	सी.जी.आर.पी.ए 3250028	20 / 11 / 2019
40	गौरव त्रिपाठी	सी.जी.आर.पी.ए 3250032	20 / 11 / 2019
41	शक्तिश्वर राम मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए 3250113	20 / 11 / 2019
42	हितेश कुमार गौतम	सी.जी.आर.पी.ए 3250118	20 / 11 / 2019
43	एम. वी. भास्कर राव	सी.जी.आर.पी.ए 3250063	20 / 11 / 2019
44	विवेक ईसान मेश्राम	सी.जी.आर.पी.ए 3250089	20 / 11 / 2019
45	अजय टोप्पो	सी.जी.आर.पी.ए 3250100	20 / 11 / 2019
46	सुमन कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250431	20 / 11 / 2019
47	प्रवीण कुमार टिर्की	सी.जी.आर.पी.ए 3250119	20 / 11 / 2019
48	गजेंद्र डोंगरवार	सी.जी.आर.पी.ए 3250443	20 / 11 / 2019
49	श्रीमति मिनी एस. मेनन	सी.जी.आर.पी.ए 3250444	20 / 11 / 2019
50	गितेश कुमार चिलबुल श्यामकुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250445	20 / 11 / 2019
51	नारायण गुप्ता वाराणसी	सी.जी.आर.पी.ए 3250446	20 / 11 / 2019
52	मनीष कुमार शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए 3250447	20 / 11 / 2019
53	भबनी कांत पुरोहित	सी.जी.आर.पी.ए 3250448	20 / 11 / 2019
54	वीरेंद्र कुमार पटेल	सी.जी.आर.पी.ए 3250040	20 / 11 / 2019
55	अनुराग वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250115	20 / 11 / 2019
56	त्रिपुरारी सिन्हा	सी.जी.आर.पी.ए 3250121	20 / 11 / 2019
57	दिव्या साहू	सी.जी.आर.पी.ए 3250117	20 / 11 / 2019
58	अनुपम कुमार वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250442	20 / 11 / 2019
59	बिरेन्द्र कुमार महतो	सी.जी.आर.पी.ए 3250432	20 / 11 / 2019
60	मनोज कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250428	20 / 11 / 2019
61	सुरेश कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250450	20 / 11 / 2019
62	सुरेश महादेव निकोसे	सी.जी.आर.पी.ए 3250074	20 / 11 / 2019
63	ई. राज शेखर राव	सी.जी.आर.पी.ए 3250082	20 / 11 / 2019
64	ई. सरिता	सी.जी.आर.पी.ए 5012339	20 / 11 / 2019

लेखापरीक्षा अधिकारी से वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत हुए अधिकारियों का विवरण ।

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
65	आशीष कुमार गुप्ता	सी.जी.आर.पी.ए 5011949	20 / 11 / 2019
66	रॉबर्ट जी. टिर्की	सी.जी.आर.पी.ए 5012274	20 / 11 / 2019
67	शम्भूनाथ शॉ	डब्लू. बी.के.एल.सी. 5011923	20 / 11 / 2019
68	रजनीश कुमार तिवारी	जे.एच.आर.एन.जी.5011927	20 / 11 / 2019
69	पंकज कुमार	बी.एच.पी.टी.ए. 5011965	20 / 11 / 2019
70	गजेंद्र बेंन्डे	सी.जी.आर.पी.ए 5011966	20 / 11 / 2019
71	योगेश कुमार बेंन्डे	सी.जी.आर.पी.ए 5011999	20 / 11 / 2019
72	राजेश कुमार	बी.एच.पी.टी.ए.5012005	20 / 11 / 2019
73	अजय कुशवाहा	यू.पी.एल.के.बी. 5012086	20 / 11 / 2019





वरिष्ठ लेखापरीक्षक / डी.ई.ओ. से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत हुए कार्मिकों का विवरण ।

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	चंद्रहास वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250179	13 / 11 / 2019
2	फैज अहमद	सी.जी.आर.पी.ए 3250461	13 / 11 / 2019
3	पंकज कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250278	13 / 11 / 2019
4	रवीश कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250454	13 / 11 / 2019
5	योगेश पाण्डेय	सी.जी.आर.पी.ए 3250336	13 / 11 / 2019
6	सुमित कुमार गुप्ता	सी.जी.आर.पी.ए 3250340	13 / 11 / 2019
7	आदित्य कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250331	13 / 11 / 2019
8	चन्दन कुमार	सी.जी.आर.पी.ए 3250155	13 / 11 / 2019

लेखापरीक्षक से वरिष्ठ लेखापरीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए कार्मिकों का विवरण ।

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	हिमांशु वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए 3250460	01 / 01 / 2020
2	त्रिवेणी ध्रुव	सी.जी.आर.पी.ए 3250189	01 / 01 / 2020
3	रमेश कुमार सिदार	सी.जी.आर.पी.ए 3250187	01 / 01 / 2020
4	हिरेन्द्र कुमार अग्रवाल	सी.जी.आर.पी.ए 3250195	01 / 01 / 2020
5	प्रदीप टोप्पो	सी.जी.आर.पी.ए 3250198	01 / 01 / 2020
6	अनिल कुमार जायसवाल	सी.जी.आर.पी.ए 3250206	01 / 01 / 2020

एमटीएस से लेखापरीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए कार्मिकों का विवरण

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती / सुश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	नेमकला नेताम	सी.जी.आर.पी.ए 3250200	01 / 01 / 2020
2	प्रमिला बाघ	सी.जी.आर.पी.ए 3250292	01 / 01 / 2020

डी.ई.ओ. ग्रेड ए से डी.ई.ओ. ग्रेड बी पर पदोन्नत हुए कार्मिकों का विवरण

1	रविन्दर	सी.जी.आर.पी.ए 3250308	01 / 01 / 2020
2	मोहित	सी.जी.आर.पी.ए 3250304	01 / 01 / 2020

एमटीएस से लिपिक के पद पर पदोन्नत हुए कार्मिकों का विवरण ।

1	सुशांत एस. पराते	सी.जी.आर.पी.ए 3250338	18 / 02 / 2020

सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों का विवरण

1	श्री पी.के. बसाक, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	सी.जी.आर.पी.ए. 2250043	31 / 01 / 2020

सेवानिवृत्त अधिकारियों / कर्मचारियों का विवरण

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती)	यूनिक आईडी	सेवानिवृत्ति दिनांक
1	रंजीत कुमार श्रीवास्तव	सी.जी.आर.पी.ई.–2250012	30.11.2019
2	अशोक नाथ महतो	सी.जी.आर.पी.ई.–2250088	31.01.2020
3	जी. आर. मजूमदार	सी.जी.आर.पी.ई.–2250129	31.03.2020
4	पी. सी. बवाली	सी.जी.आर.पी.ई.–2250144	30.04.2020
5	निर्मल कुमार	सी.जी.आर.पी.ई.–2250073	31.05.2020
6	पी. आर. टोप्पो	सी.जी.आर.पी.ई.–2250124	31.05.2020
7	राजेन्द्र कुमार ध्रुव	सी.जी.आर.पी.ई.–2250097	31.08.2020

लेखापाल से वरिष्ठ लेखापाल

स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	विजय कुमार लकड़ा	सी.जी.आर.पी.ई.–2112337	1.01.2020
2	प्रमोद कुमार	सी.जी.आर.पी.ई.–2250385	01.01.2020
3	पी. धीरज नायडू	सी.जी.आर.पी.ई.–2180915	01.01.2020
4	रितेश दीवान	सी.जी.आर.पी.ई.–2250767	01.01.2020
5	अमित रॉबिन लकड़ा	सी.जी.आर.पी.ई.–2250453	01.01.2020
6	चन्द्रहास ठाकुर	सी.जी.आर.पी.ई.–2250417	01.01.2020
7	गौरव गजभिये	सी.जी.आर.पी.ई.–2250451	01.01.2020
8	संदीप कुमार सामंता	सी.जी.आर.पी.ई.–2250761	01.01.2020
9	अपूर्वा श्री	सी.जी.आर.पी.ई.–2250765	01.01.2020
10	अबरार अहमद अंसारी	सी.जी.आर.पी.ई.–2250763	01.01.2020
11	लॉबिन ईयॉन कॉस्टर	सी.जी.आर.पी.ई.–2250741	02.01.2020
12	श्रेयांश यादव	सी.जी.आर.पी.ई.–22504550	06.01.2020

लेखा लिपिक से लेखापाल

1	दुर्गेश्वरी घाटचवरे	सी.जी.आर.पी.ई.–2250713	01.01.2020
2	उत्तम कुमार	सी.जी.आर.पी.ई.–2250715	01.01.2020
3	योगेश्वर लाल	सी.जी.आर.पी.ई.–2250406	01.01.2020
4	शिवकुमार शांडिल	सी.जी.आर.पी.ई.–2250383	01.01.2020

एम.टी.एस. से लेखापाल			
स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	व्ही. अनिल मिंज	सी.जी.आर.पी.ई.–2250711	01.01.2020
डी.ई.ओ. ग्रेड 'ए' से ग्रेड 'बी'			
1	सुनील कुमार सिन्हा	सी.जी.आर.पी.ई.–2250436	01.01.2020
एम.टी.एस से लेखा लिपिक			
1	रमेश, लेखा	सी.जी.आर.पी.ई.–2250395	01.01.2020
2	डी. भास्कर राव	सी.जी.आर.पी.ई.–2250398	01.01.2020
3	रमाकान्त दूबे	सी.जी.आर.पी.ई.–2250384	01.01.2020
एम.टी.एस से लेखा लिपिक			
स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती)	यूनिक आईडी	नई भर्ती दिनांक
1	विशाल निमजे	सी.जी.आर.पी.ई.–2250812	03.01.2020
2	मोना आनन्द	सी.जी.आर.पी.ई.–2250813	04.02.2020
मृत कर्मचारी			
स.क्र.	नाम (सर्वश्री / श्रीमती)	यूनिक आईडी	मृत्यु दिनांक
1	महेश ध्रुव	सी.जी.आर.पी.ई.–2250206	22.08.2020



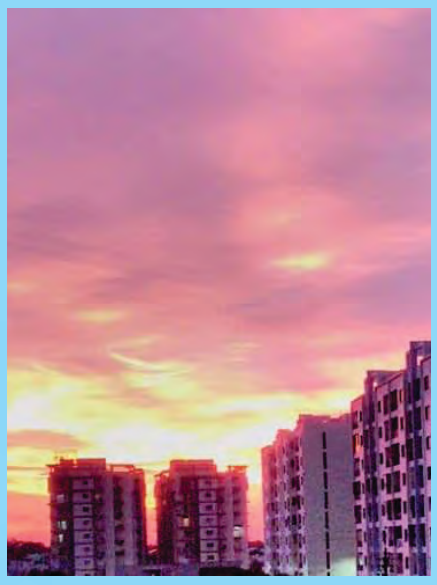








ई. अनन्या (उम्र 9 वर्ष) पिता – श्री ई. राजशेखर राव (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)







आर्ची साहू (उम्र 6 वर्ष) पिता – श्री सुशांत साहू (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

छत्तीसगढ़-रायपुर